लाल–किताब संहिता

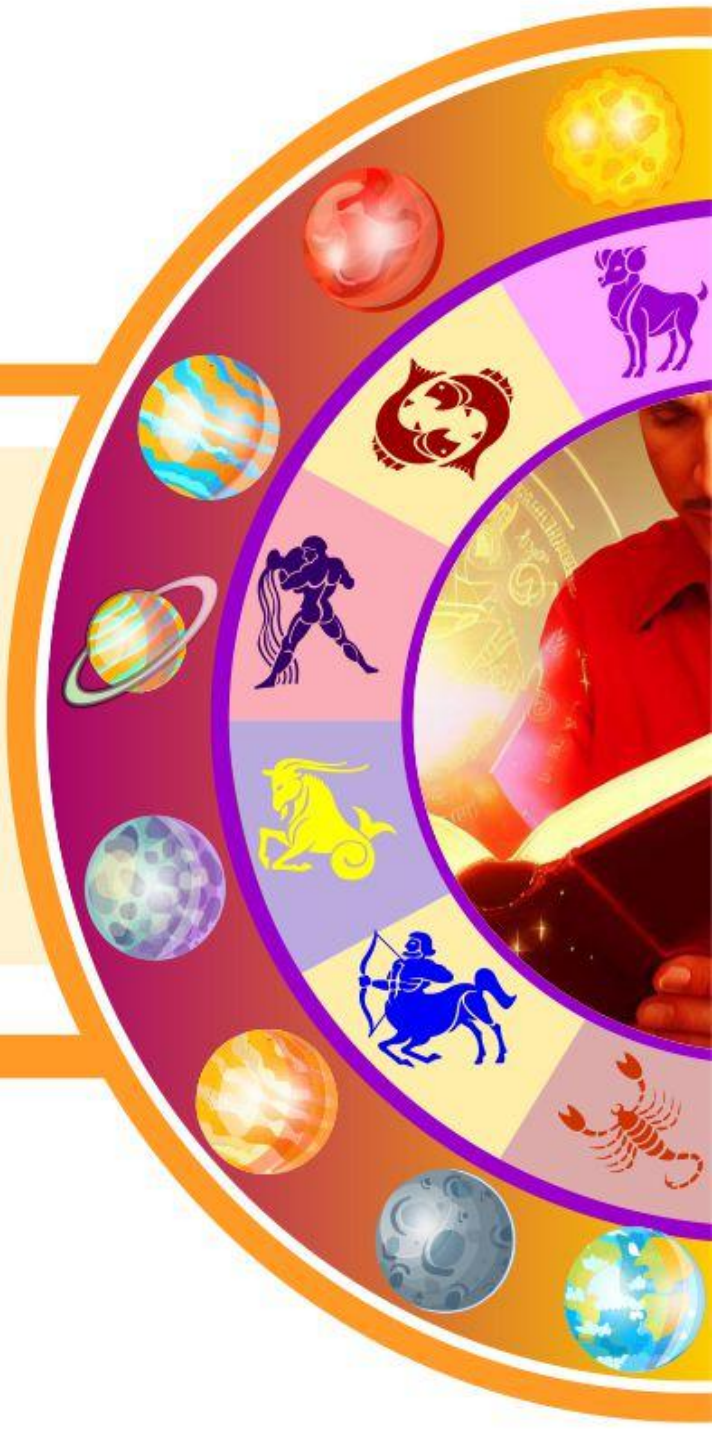

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	11 नवम्बर 2011
जन्म समय	11:11:00
जन्म दिन	शुक्रवार
जन्म स्थान	khatu
राज्य	rajasthan
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	11:17:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	14:37:47 hrs
इष्ट काल	12: 29: 52 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2068
शक संवत	1933
संवत्सर	खर
ऋतु	शरद
मास	अग्रहन
पक्ष	कृष्ण
वार	शुक्रवार
तिथि	प्रतिपदा
नक्षत्र (पद)	कृतिका (1)
योग	वारियन
करन	बल्लव

अवकहड़ा चक्र

पाया	लौह
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुश्पद
योनि	मेष (स्त्री)
गण	राक्षस
नाड़ी	अन्त
रज्जु	नाभि
तत्व	पृथ्वी
तत्वाधिपति	बुध
विहग	भारधंक
नाड़ी पद	अन्त
वेध	विशाखा
आद्याक्षर	अ
दशा बैलेंस	सूर्य – 5व00मा024दि0
वर्तमान दशा	चन्द्रमा–बुध–गुरू
भयात	10: 20: 16 Ghati
भभोग	66: 41: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	तुला
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृश्चिक
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	024:01:22
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	06:11:12AM
सूर्यास्त	05:03:49PM
जन्मदिन का ग्रह	शुक्र
जन्मसमय का ग्रह	मंगल

लग्न
मकर

राशि
मेष

नक्षत्र – पद
कृतिका – 1

लग्नाधिपति
शनि

राशिपति
मंगल

नक्षत्रपति
सूर्य

घात चक्र

कार्तिक अशुभ मास	रविवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मेष अशुभ राशि	मेष अशुभ लग्न	1, 6, 11 अशुभ तिथि
माघ अशुभ नक्षत्र	विषकुम्भ अशुभ योग	बावा अशुभ करन

शुभ बिन्दु

2 मूलांक	8 भाग्यांक	1, 4 मित्रांक
3, 6 शत्रु अंक	17, 19, 22, 26, 28, 31, 35, 37 शुभ वर्ष	शुक्रवार, शनिवार, बुधवार शुभ दिन
शुक्र, शनि, बुध शुभ ग्रह	गुरू, सूर्य अशुभ ग्रह	कर्क, तुला, धनु, कुम्भ मित्र राशि
मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मित्र लग्न	नीलम शुभ रत्न	नीली, जमुनिया, लाजवर्त शुभ उपरत्न
पन्ना भाग्य रत्न	नरसिंह अनुकूल देवता	लोहा शुभ धातु
श्याम शुभ रंग	पश्चिम दिशा	संध्या शुभ समय
कुलथी, कस्तुरी, कृष्ण गाय, जता शुभ पदार्थ	उड़द शुभ अन्न	तेल शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य

तुला
24:26:58
विशाखा (2)
सम राशि

चन्द्रमा

मेष
28:44:27
कृतिका (1)
नीच राशि

मंगल

सिहं
06:00:11
मघा (2)
सम राशि

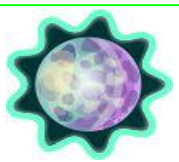

बुध

वृश्चिक
16:48:17
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

गुरू (व.)

मेष
09:30:47
अश्विनी (3)
स्व नक्षत्र

शुक्र

वृश्चिक
16:59:33
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

शनि

कन्या
29:33:02
चित्रा (2)
सम राशि

राहु

वृश्चिक
21:38:24
ज्येष्ठा (2)
मित्र राशि

केतु

वृष
21:38:24
रोहिणी (4)
नीच राशि

हर्षल (व.)

मीन
06:57:48
उत्तरभाद्र (2)
नीच राशि

नेपच्यून

कुम्भ
04:06:38
धनिष्ठा (4)
सम राशि

प्लूटो

धनु
11:38:00
मूला (4)
सम राशि

लग्न

मकर
02:50:12
उत्तराषाढ़ (2)
---

1 0वां कस्प

तुला
17:51:40
स्वाति (4)

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह		व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♑ मकर	02:50:12	उत्तराषाढ़ (21)	2		
☉	सूर्य		♎ तुला	24:26:58	विशाखा (16)	2	भ्रात्रि	नीच राशि
☽	चन्द्रमा		♈ मेष	28:44:27	कृतिका (3)	1	अमात्य	सम राशि
♂	मंगल		♌ सिहं	06:00:11	मघा (10)	2	दारा	मित्र राशि
☿	बुध		♏ वृश्चिक	16:48:17	ज्येष्ठा (18)	1	अपत्या	स्व नक्षत्र
♃	गुरू	व.	♈ मेष	09:30:47	अश्विनी (1)	3	ज्ञाति	मित्र राशि
♀	शुक्र		♏ वृश्चिक	16:59:33	ज्येष्ठा (18)	1	मात्रि	सम राशि
♄	शनि		♍ कन्या	29:33:02	चित्रा (14)	2	आत्म	मित्र राशि
☊	राहु		♏ वृश्चिक	21:38:24	ज्येष्ठा (18)	2		नीच राशि
☋	केतु		♉ वृष	21:38:24	रोहिणी (4)	4		नीच राशि
⚷	हर्षल	व.	♓ मीन	06:57:48	उत्तरभाद्र (26)	2		सम राशि
♆	नेपच्यून		♒ कुम्भ	04:06:38	धनिष्ठा (23)	4		सम राशि
♇	प्लूटो		♐ धनु	11:38:00	मूला (19)	4		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

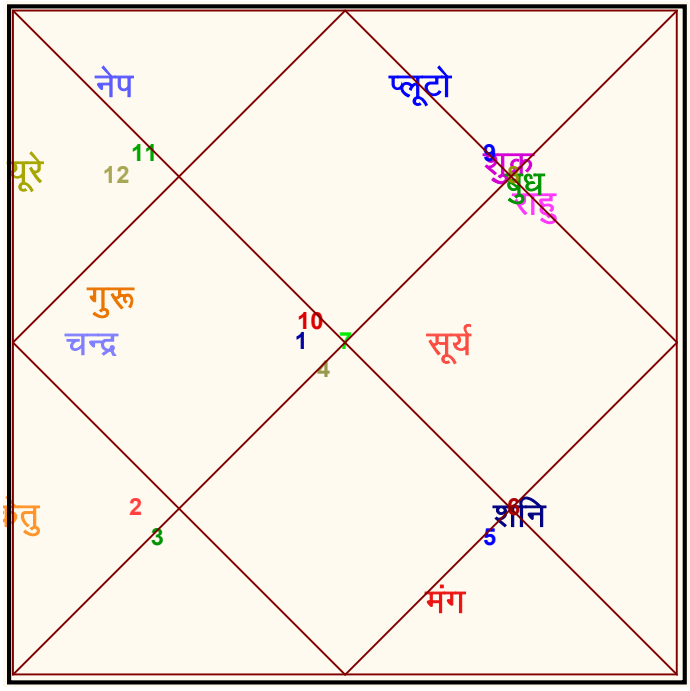

नवांश कुण्डली

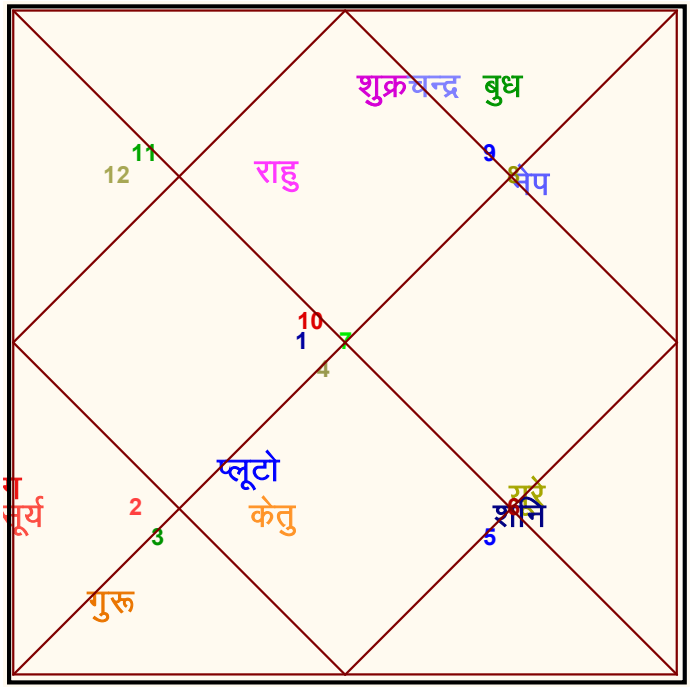

लाल किताब में ग्रह

सूर्य

भाव न. 10, स्वयं का ऋण, शत्रु के घर में, अशुभ भाव में, बिलमुकाबिल (चन्द्रमा, गुरू)

चन्द्रमा

भाव न. 4, ग्रहफल, पक्के घर का, अपने घर का, भाग्योदय का, शुभ भाव में, साथी (मंगल)

मंगल

भाव न. 8, किस्मत का, ग्रहफल, पक्के घर का, अपने घर का, जन्मसमय का, अशुभ भाव में, साथी (चन्द्रमा)

बुध

भाव न. 11, स्वभाव (केतु), अशुभ भाव में

गुरू

भाव न. 4, उच्चस्थ, मित्र के घर में, शुभ भाव में

शुक्र

भाव न. 11, जन्मदिन का, मित्र के घर में, शुभ भाव में

शनि

भाव न. 9, नेक स्वभाव, राशिफल, जालीमाना ऋण, शुभ भाव में

राहु

भाव न. 11, मित्र के घर में, अशुभ भाव में

केतु

भाव न. 5, अशुभ भाव में

ग्रह स्थिति (लाल किताब)

लाल किताब टेवा

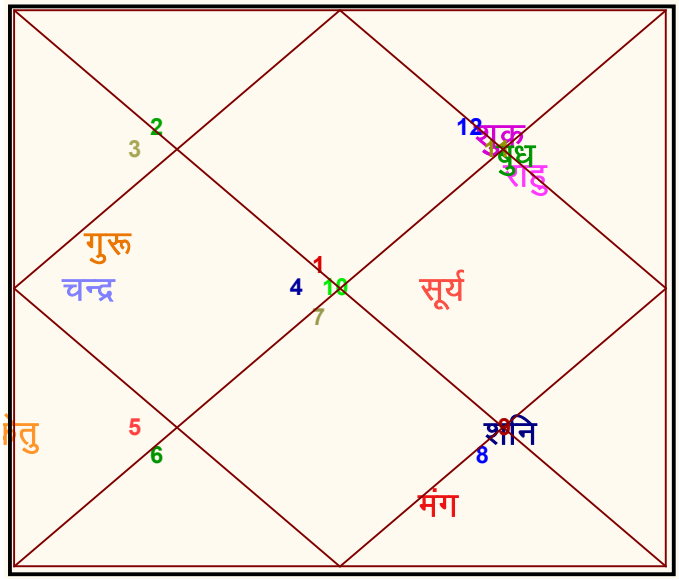

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

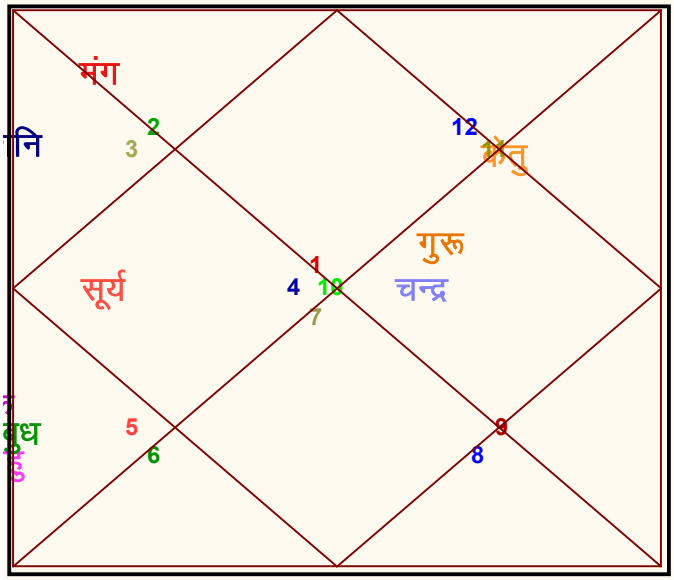

ग्रह योग

सूर्य + गुरू	(दृष्टि–100), चन्द्रमा, वाल्दैनी खुन (वीर्य)
बुध + शुक्र	(युति), सूर्य, स्वास्थ्य / सेहत

ग्रह दृष्टि (लाल किताब)

ग्रह	मुख्य	मददगार	टकराव	बुनियाद	दुश्मन	साझी दिवार	अचानक चोट
सूर्य			केतु			बुध, शुक्र, राहु	मंग.
चन्द्रमा	सूर्य(100)	मंग.	बुध, शुक्र, राहु			केतु	
मंगल				चन्द्र, गुरू	केतु	शनि	सूर्य
बुध (बद)					मंग.		शनि
गुरू (बद)	सूर्य(100)	मंग.	बुध, शुक्र, राहु			केतु	
शुक्र (बद)					मंग.		शनि
शनि (बद)			चन्द्र, गुरू	केतु		सूर्य	बुध, शुक्र, राहु
राहु					मंग.		शनि
केतु	शनि(50)	शनि					

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

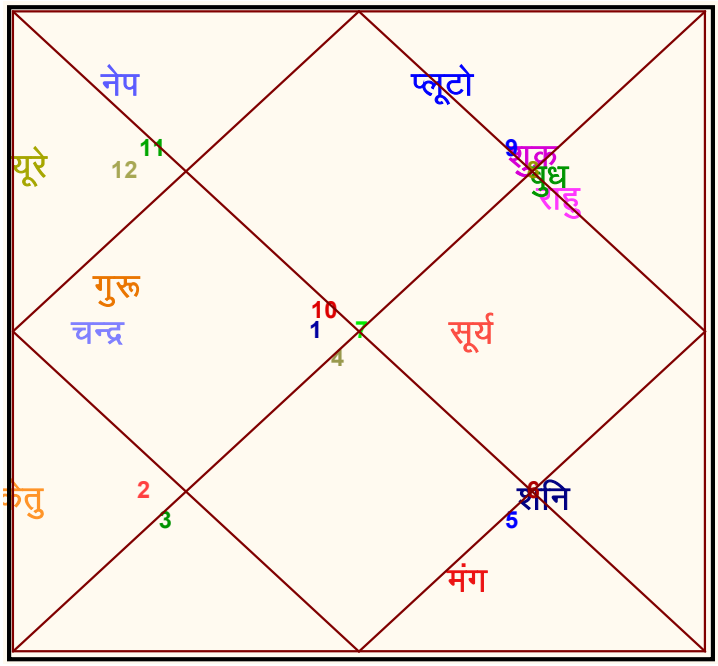

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

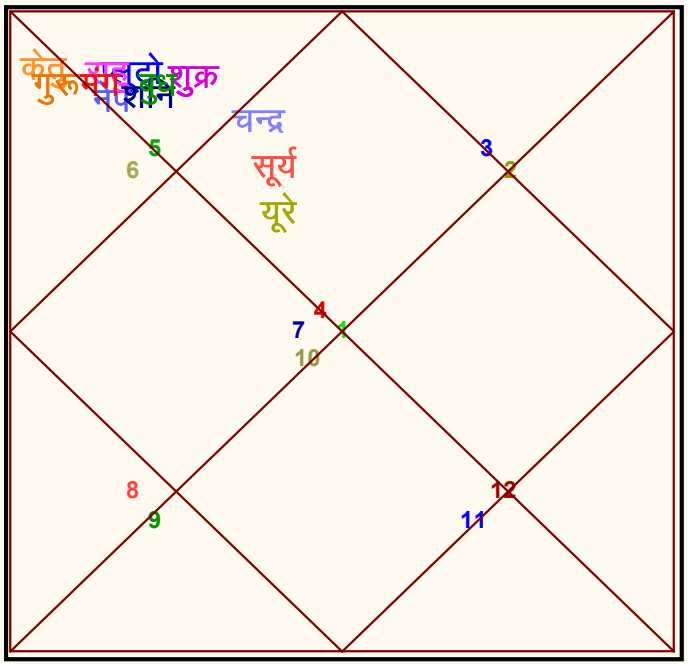

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

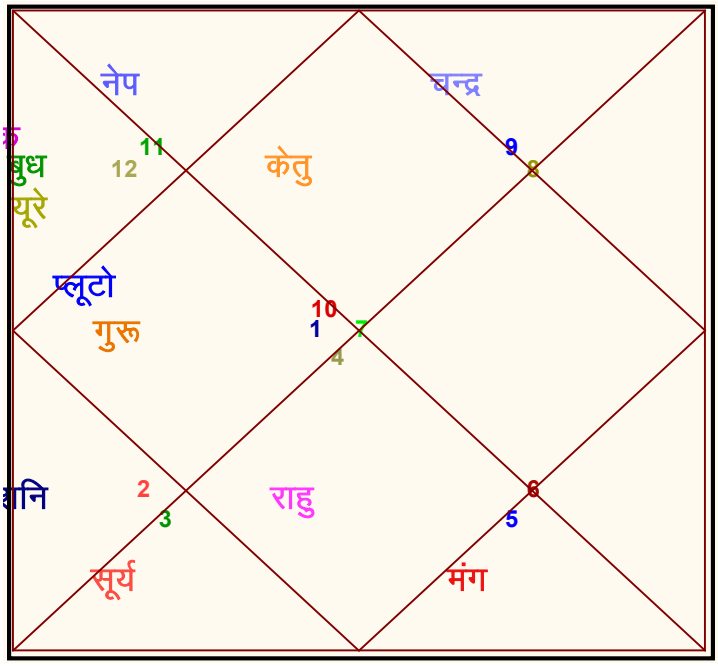

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

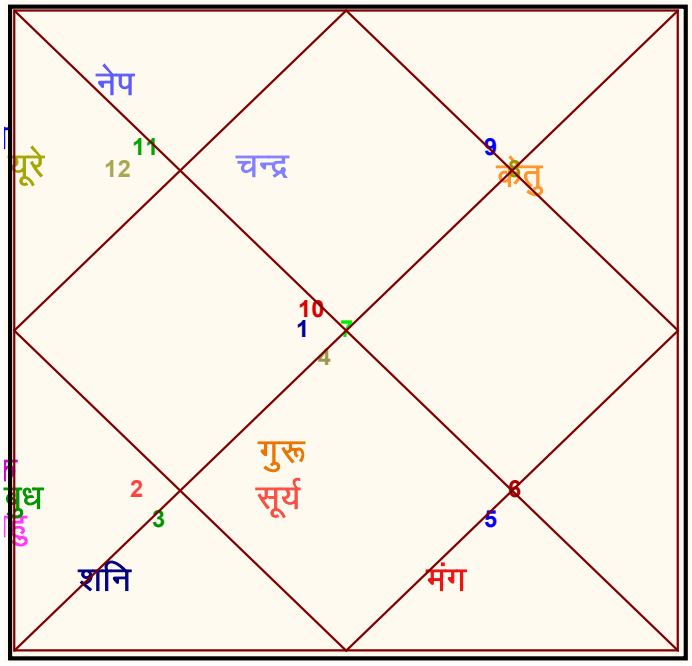

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

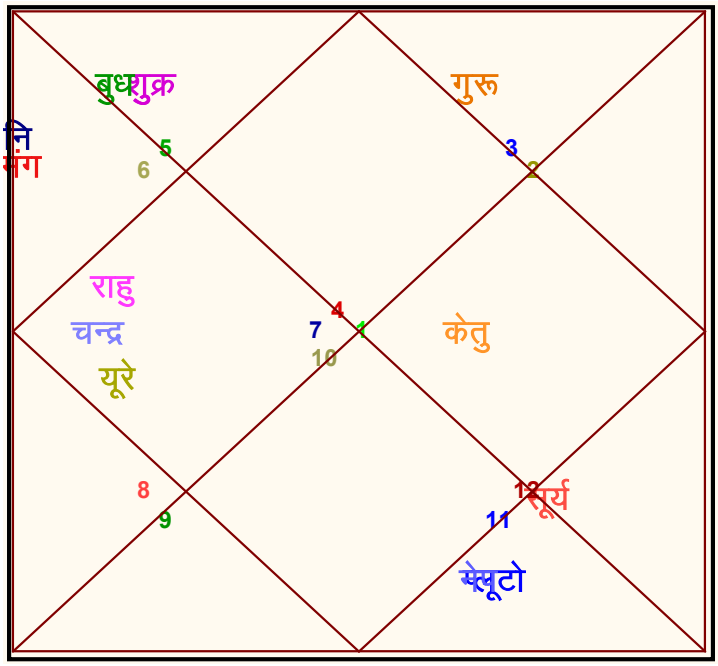

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

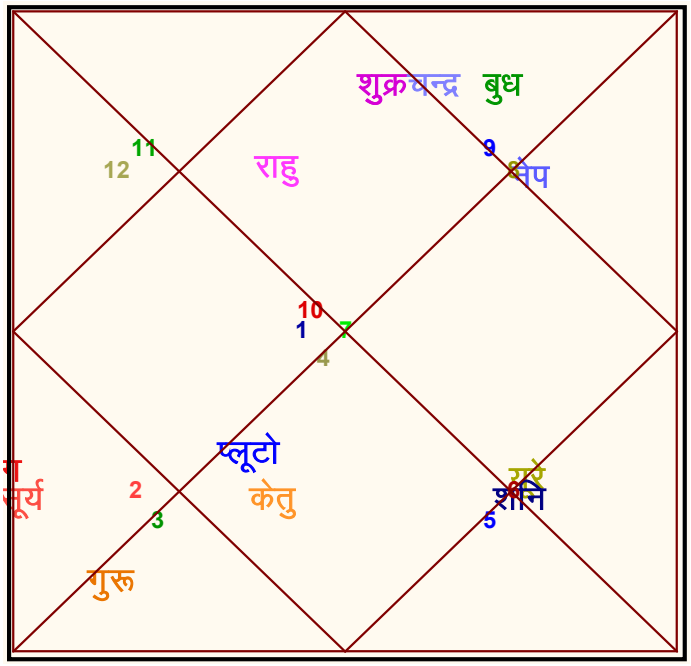

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

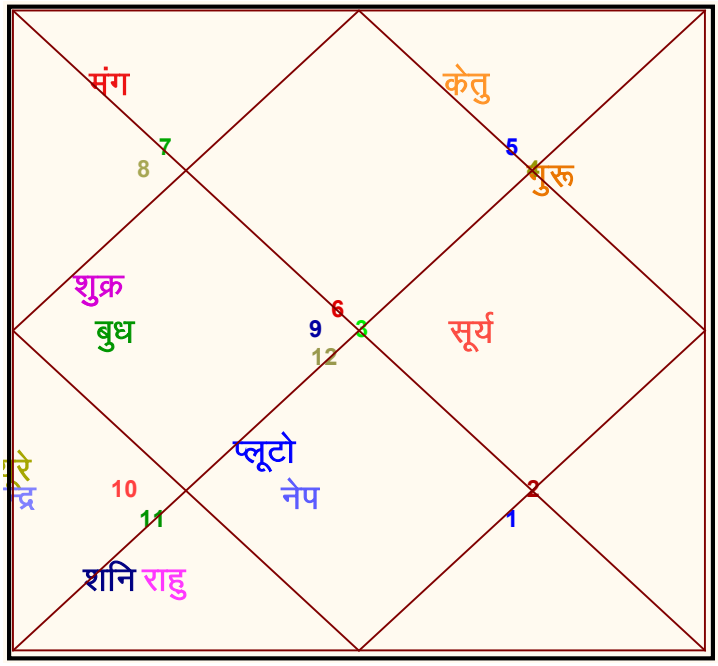

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

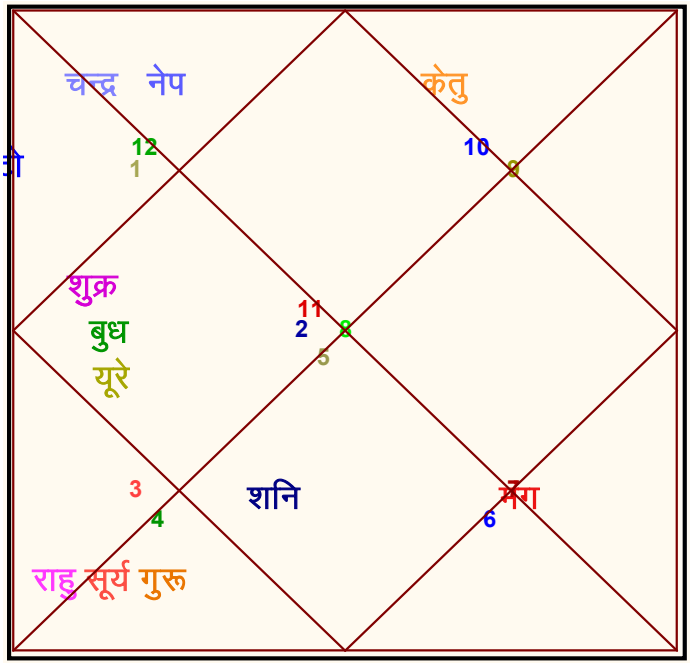

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

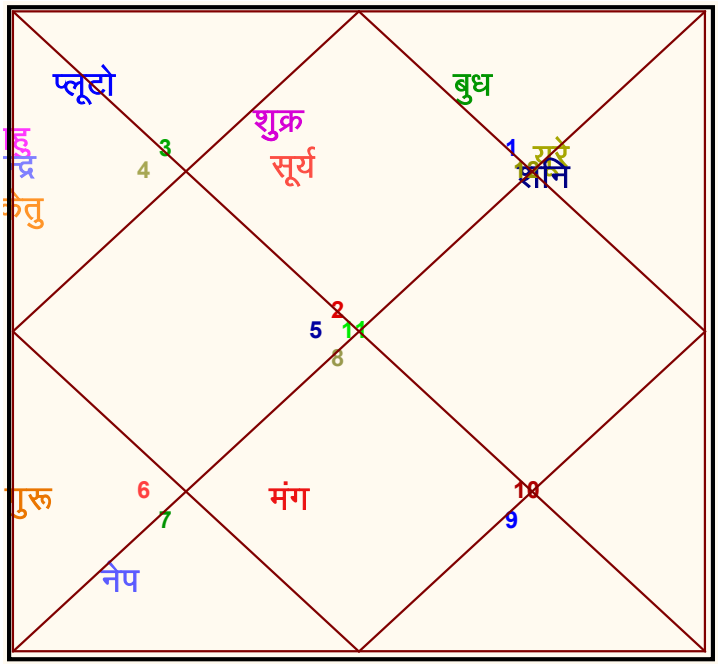

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

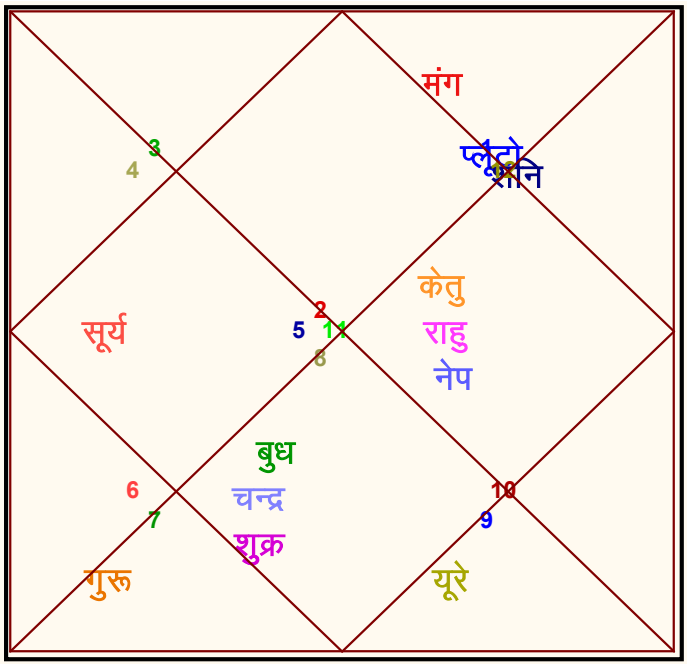

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

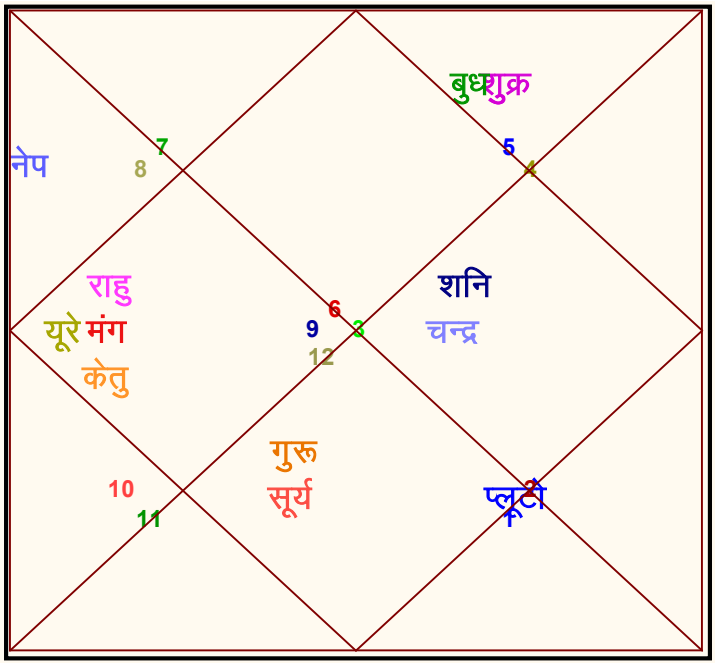

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

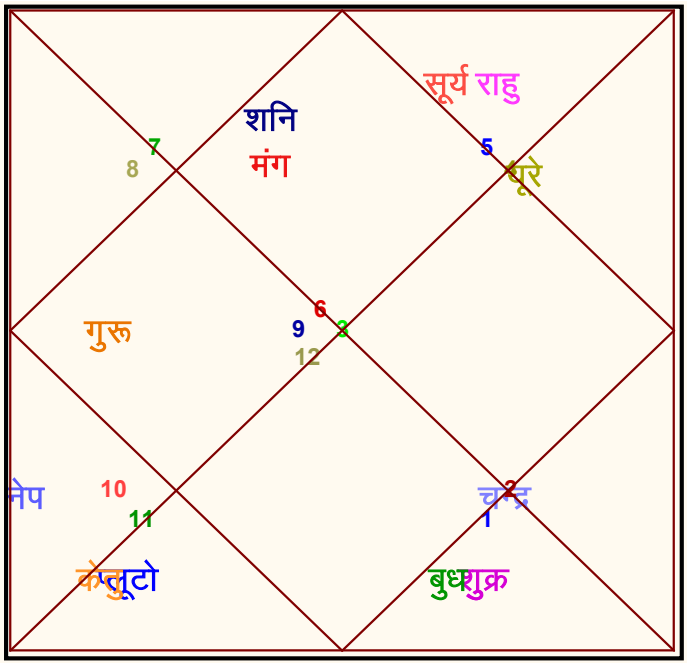

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

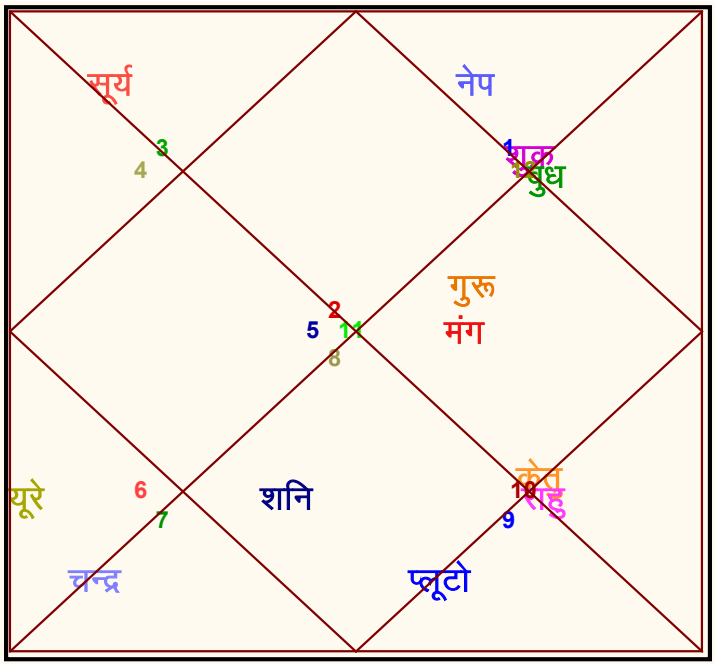

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

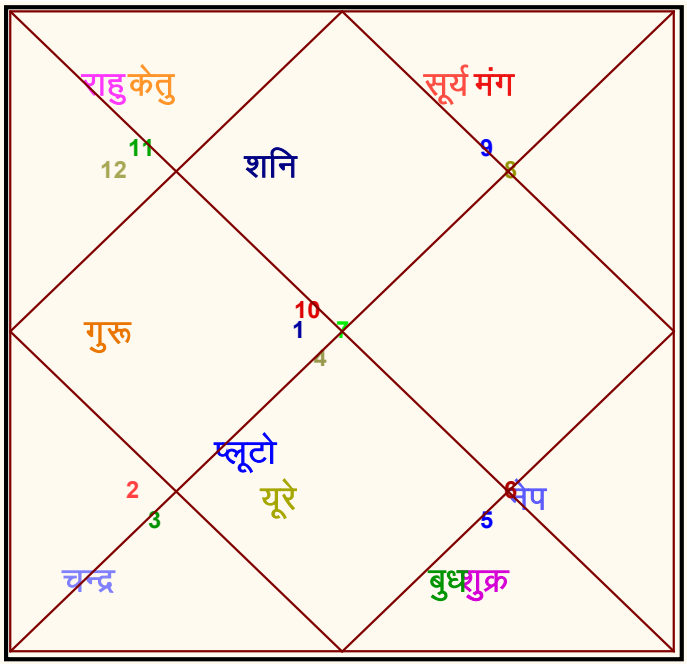

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

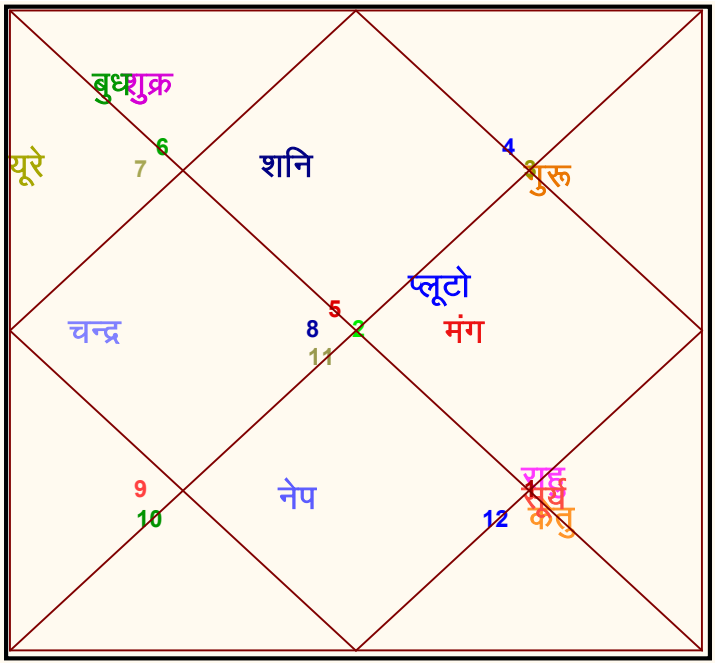

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

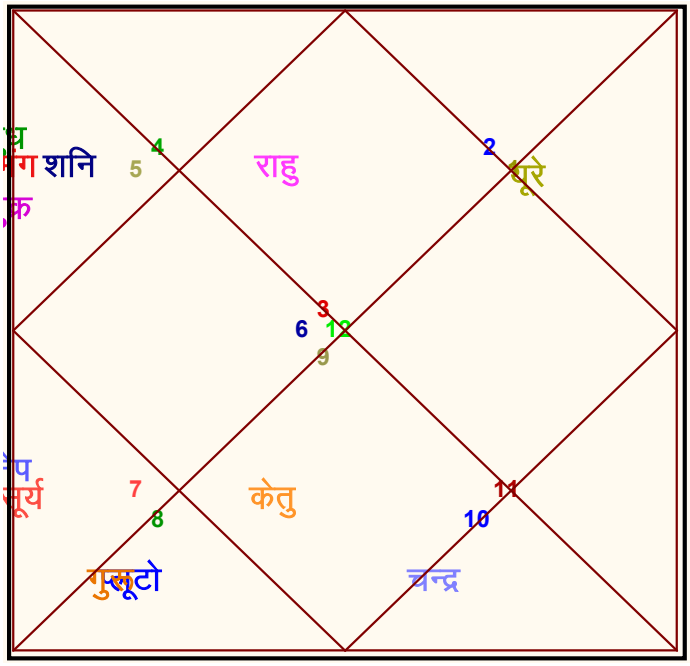

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	04.82	58.58	02.67	39.40	31.50	16.66	53.18
सप्त वर्ग बल	67.50	52.50	120.00	78.75	37.50	71.25	112.50
युग्म अयुग्म बल	15.00	00.00	15.00	15.00	30.00	15.00	00.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	30.00	60.00	30.00	15.00
द्रेक्कन बल	00.00	15.00	15.00	15.00	15.00	00.00	00.00
स्थान बल	**147.32**	**186.08**	**182.67**	**178.15**	**174.00**	**132.91**	**180.68**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	89.28	139.91	190.28	107.97	105.46	99.94	188.21
दिग बल	**57.80**	**56.37**	**36.05**	**44.66**	**27.77**	**09.71**	**31.10**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	165.15	112.75	120.16	127.59	79.36	19.42	103.65
नतोन्नत बल	57.75	02.25	02.25	57.75	00.00	57.75	02.25
पक्ष बल	01.43	58.57	01.43	01.43	58.57	58.57	01.43
त्रिभाग बल	60.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	07.86	06.48	43.92	57.12	45.38	01.88	40.94
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**187.04**	**97.29**	**47.60**	**116.30**	**178.95**	**163.20**	**44.62**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	167.00	97.29	71.05	103.84	159.77	163.20	66.59
चेष्टा बल	**07.86**	**58.57**	**30.00**	**45.00**	**60.00**	**45.00**	**30.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	15.72	195.23	75.00	90.00	120.00	150.00	75.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-08.08**	**-18.63**	**05.51**	**-18.21**	**-24.66**	**-18.21**	**06.67**
कुल षड्बल	**451.94**	**431.12**	**318.97**	**391.61**	**450.36**	**375.47**	**301.64**
षड्बल (रूप में)	**7.53**	**7.19**	**5.32**	**6.53**	**7.51**	**6.26**	**5.03**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	115.88	119.75	106.32	93.24	115.48	113.78	100.55
तुलनात्मक स्थिति	**1**	**3**	**6**	**4**	**2**	**5**	**7**
इष्ट फल	**08.17**	**58.57**	**08.95**	**42.11**	**43.48**	**27.38**	**39.94**
कष्ट फल	**51.83**	**01.43**	**51.05**	**17.89**	**16.52**	**32.62**	**20.06**
दिप्ति बल	**100.00**	**58.57**	**26.15**	**47.90**	**55.02**	**28.78**	**08.30**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
भावाधिपति बल	301.64	301.64	450.36	318.97	375.47	391.61	431.12	451.94	391.61	375.47	318.97	450.36
भाव दिग्बल	30.00	50.00	50.00	00.00	10.00	10.00	30.00	40.00	20.00	30.00	20.00	50.00
भाव दृष्टिबल	03.91	12.64	05.60	-22.01	06.55	-06.32	-15.17	04.91	33.33	-15.23	-13.40	-15.88
भावबल योग	**335.55**	**364.28**	**505.96**	**296.96**	**392.03**	**395.29**	**445.95**	**496.85**	**444.94**	**390.24**	**325.57**	**484.47**
भावबल (रूप में)	**5.59**	**6.07**	**8.43**	**4.95**	**6.53**	**6.59**	**7.43**	**8.28**	**7.42**	**6.50**	**5.43**	**8.07**
तुलनात्मक स्थिति	**10**	**9**	**1**	**12**	**7**	**6**	**4**	**2**	**5**	**8**	**11**	**3**

विंशोत्तरी दशा (1)

Sun (5 y.0 m.24 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (024:01:22)

अयनांश

सूर्य (6 वर्ष)

11/11/2011 To 05/12/2016

10th भाव नीच विशेष	तुला राशि विशा. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 भावपति
सूर्य	-------	-------
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	29-01-2012	00.00
राहु	24-12-2012	00.22
गुरू	12-10-2013	01.12
शनि	23-09-2014	01.92
बुध	31-07-2015	02.87
केतु	05-12-2015	03.72
शुक्र	05-12-2016	04.07

चन्द्रमा (10 वर्ष)

05/12/2016 To 05/12/2026

4th भाव विशेष	मेष राशि कृति. (1) नक्षत्र	शत्रु संबंध 7 भावपति
चन्द्रमा	05-10-2017	05.07
मंगल	06-05-2018	05.90
राहु	05-11-2019	06.48
गुरू	07-03-2021	07.98
शनि	05-10-2022	09.32
बुध	06-03-2024	10.90
केतु	05-10-2024	12.32
शुक्र	06-06-2026	12.90
सूर्य	05-12-2026	14.57

मंगल (7 वर्ष)

05/12/2026 To 05/12/2033

8th भाव विशेष	सिहं राशि मघा (2) नक्षत्र	सम संबंध 4 , 11 भावपति
मंगल	03-05-2027	15.07
राहु	21-05-2028	15.48
गुरू	27-04-2029	16.53
शनि	06-06-2030	17.46
बुध	03-06-2031	18.57
केतु	30-10-2031	19.56
शुक्र	30-12-2032	19.97
सूर्य	06-05-2033	21.13
चन्द्रमा	05-12-2033	21.48

राहु (18 वर्ष)

05/12/2033 To 05/12/2051

11th भाव नीच विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (2) नक्षत्र	शत्रु संबंध भावपति
राहु	17-08-2036	22.07
गुरू	11-01-2039	24.77
शनि	17-11-2041	27.17
बुध	05-06-2044	30.02
केतु	24-06-2045	32.57
शुक्र	24-06-2048	33.62
सूर्य	19-05-2049	36.62
चन्द्रमा	17-11-2050	37.52
मंगल	05-12-2051	39.02

गुरू (16 वर्ष)

05/12/2051 To 05/12/2067

4th भाव वक्री विशेष	मेष राशि अशि. (3) नक्षत्र	मित्र संबंध 12 , 3 भावपति
गुरू	23-01-2054	40.07
शनि	05-08-2056	42.20
बुध	11-11-2058	44.73
केतु	18-10-2059	47.00
शुक्र	18-06-2062	47.93
सूर्य	06-04-2063	50.60
चन्द्रमा	05-08-2064	51.40
मंगल	12-07-2065	52.73
राहु	05-12-2067	53.67

शनि (19 वर्ष)

05/12/2067 To 05/12/2086

9th भाव विशेष	कन्या राशि चित्रा (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 1 , 2 भावपति
शनि	08-12-2070	56.07
बुध	18-08-2073	59.08
केतु	26-09-2074	61.77
शुक्र	26-11-2077	62.88
सूर्य	08-11-2078	66.04
चन्द्रमा	08-06-2080	66.99
मंगल	18-07-2081	68.58
राहु	24-05-2084	69.68
गुरू	05-12-2086	72.53

विंशोत्तरी दशा (2)

बुध (17 वर्ष)

05/12/2086 To 05/12/2103

11th भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 6 , 9 भावपति
बुध	03-05-2089	75.07
केतु	30-04-2090	77.48
शुक्र	28-02-2093	78.47
सूर्य	05-01-2094	81.30
चन्द्रमा	06-06-2095	82.15
मंगल	02-06-2096	83.57
राहु	21-12-2098	84.56
गुरू	28-03-2101	87.11
शनि	05-12-2103	89.38

केतु (7 वर्ष)

05/12/2103 To 05/12/2110

5th भाव नीच विशेष	वृष राशि रोहि. (4) नक्षत्र	सम संबंन्ध भावपति
केतु	03-05-2104	92.07
शुक्र	03-07-2105	92.48
सूर्य	08-11-2105	93.64
चन्द्रमा	09-06-2106	93.99
मंगल	05-11-2106	94.58
राहु	23-11-2107	94.98
गुरू	30-10-2108	96.03
शनि	08-12-2109	96.97
बुध	05-12-2110	98.08

शुक्र (20 वर्ष)

05/12/2110 To 05/12/2130

11th भाव विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	शत्रु संबंन्ध 5 , 10 भावपति
शुक्र	06-04-2114	99.07
सूर्य	06-04-2115	102.40
चन्द्रमा	05-12-2116	103.40
मंगल	04-02-2118	105.07
राहु	04-02-2121	106.23
गुरू	05-10-2123	109.23
शनि	05-12-2126	111.90
बुध	05-10-2129	115.07
केतु	05-12-2130	117.90

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	05:12:2016 (17:39:34)	05:12:2026 (19:18:58)
अन्तर्रदशा	बुध	05:10:2022 (23:18:58)	06:03:2024 (05:39:34)
प्रत्यन्तर्रदशा	गुरू	07:10:2023 (05:43:58)	15:12:2023 (04:23:58)
सूक्ष्मदशा	शुक्र	10:11:2023 (03:16:38)	21:11:2023 (15:03:18)
प्राणदशा	चन्द्रमा	12:11:2023 (15:01:45)	13:11:2023 (14:00:38)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

सूर्य दशा

(11:11:2011 To 05:12:2016)

सूर्य अन्तर

सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

(11:11:2011 To 29:01:2012)

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	26-11-2011	00.00
बुध	14-12-2011	00.04
केतु	22-12-2011	00.09
शुक्र	12-01-2012	00.11
सूर्य	18-01-2012	00.17
चन्द्रमा	29-01-2012	00.19

राहु अन्तर

(29:01:2012 To 24:12:2012)

राहु	19-03-2012	00.22
गुरू	01-05-2012	00.35
शनि	23-06-2012	00.47
बुध	08-08-2012	00.61
केतु	28-08-2012	00.74
शुक्र	21-10-2012	00.79
सूर्य	07-11-2012	00.94
चन्द्रमा	04-12-2012	00.99
मंगल	24-12-2012	01.06

गुरू अन्तर

(24:12:2012 To 12:10:2013)

गुरू	31-01-2013	01.12
शनि	19-03-2013	01.22
बुध	29-04-2013	01.35
केतु	16-05-2013	01.46
शुक्र	04-07-2013	01.51
सूर्य	18-07-2013	01.64
चन्द्रमा	12-08-2013	01.68
मंगल	29-08-2013	01.75
राहु	12-10-2013	01.80

शनि अन्तर

(12:10:2013 To 23:09:2014)

शनि	05-12-2013	01.92
बुध	24-01-2014	02.07
केतु	13-02-2014	02.20
शुक्र	12-04-2014	02.26
सूर्य	29-04-2014	02.42
चन्द्रमा	28-05-2014	02.46
मंगल	17-06-2014	02.54
राहु	08-08-2014	02.60
गुरू	23-09-2014	02.74

बुध अन्तर

(23:09:2014 To 31:07:2015)

बुध	06-11-2014	02.87
केतु	24-11-2014	02.99
शुक्र	15-01-2015	03.04
सूर्य	31-01-2015	03.18
चन्द्रमा	25-02-2015	03.22
मंगल	16-03-2015	03.29
राहु	01-05-2015	03.34
गुरू	11-06-2015	03.47
शनि	31-07-2015	03.58

केतु अन्तर

(31:07:2015 To 05:12:2015)

केतु	07-08-2015	03.72
शुक्र	28-08-2015	03.74
सूर्य	04-09-2015	03.80
चन्द्रमा	14-09-2015	03.81
मंगल	22-09-2015	03.84
राहु	11-10-2015	03.86
गुरू	28-10-2015	03.92
शनि	17-11-2015	03.96
बुध	05-12-2015	04.02

शुक्र अन्तर

(05:12:2015 To 05:12:2016)

शुक्र	04-02-2016	04.07
सूर्य	23-02-2016	04.23
चन्द्रमा	24-03-2016	04.28
मंगल	14-04-2016	04.37
राहु	08-06-2016	04.43
गुरू	27-07-2016	04.58
शनि	23-09-2016	04.71
बुध	14-11-2016	04.87
केतु	05-12-2016	05.01

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(05:12:2016 To 05:12:2026)

चन्द्रमा अन्तर

(05:12:2016 To 05:10:2017)		
चन्द्रमा	31-12-2016	05.07
मंगल	17-01-2017	05.14
राहु	04-03-2017	05.18
गुरू	14-04-2017	05.31
शनि	01-06-2017	05.42
बुध	14-07-2017	05.55
केतु	01-08-2017	05.67
शुक्र	20-09-2017	05.72
सूर्य	05-10-2017	05.86

मंगल अन्तर

(05:10:2017 To 06:05:2018)		
मंगल	18-10-2017	05.90
राहु	19-11-2017	05.93
गुरू	17-12-2017	06.02
शनि	20-01-2018	06.10
बुध	19-02-2018	06.19
केतु	04-03-2018	06.27
शुक्र	08-04-2018	06.31
सूर्य	19-04-2018	06.41
चन्द्रमा	06-05-2018	06.43

राहु अन्तर

(06:05:2018 To 05:11:2019)		
राहु	28-07-2018	06.48
गुरू	09-10-2018	06.71
शनि	03-01-2019	06.91
बुध	22-03-2019	07.15
केतु	23-04-2019	07.36
शुक्र	23-07-2019	07.45
सूर्य	19-08-2019	07.70
चन्द्रमा	04-10-2019	07.77
मंगल	05-11-2019	07.90

गुरू अन्तर

(05:11:2019 To 07:03:2021)		
गुरू	09-01-2020	07.98
शनि	26-03-2020	08.16
बुध	03-06-2020	08.37
केतु	02-07-2020	08.56
शुक्र	21-09-2020	08.64
सूर्य	15-10-2020	08.86
चन्द्रमा	25-11-2020	08.93
मंगल	24-12-2020	09.04
राहु	07-03-2021	09.12

शनि अन्तर

(07:03:2021 To 05:10:2022)		
शनि	06-06-2021	09.32
बुध	27-08-2021	09.57
केतु	30-09-2021	09.79
शुक्र	04-01-2022	09.88
सूर्य	02-02-2022	10.15
चन्द्रमा	22-03-2022	10.23
मंगल	25-04-2022	10.36
राहु	20-07-2022	10.45
गुरू	05-10-2022	10.69

बुध अन्तर

(05:10:2022 To 06:03:2024)		
बुध	18-12-2022	10.90
केतु	17-01-2023	11.10
शुक्र	13-04-2023	11.18
सूर्य	09-05-2023	11.42
चन्द्रमा	21-06-2023	11.49
मंगल	21-07-2023	11.61
राहु	07-10-2023	11.69
गुरू	15-12-2023	11.90
शनि	06-03-2024	12.09

केतु अन्तर

(06:03:2024 To 05:10:2024)		
केतु	18-03-2024	12.32
शुक्र	23-04-2024	12.35
सूर्य	03-05-2024	12.45
चन्द्रमा	21-05-2024	12.48
मंगल	03-06-2024	12.53
राहु	05-07-2024	12.56
गुरू	02-08-2024	12.65
शनि	05-09-2024	12.73
बुध	05-10-2024	12.82

शुक्र अन्तर

(05:10:2024 To 06:06:2026)		
शुक्र	15-01-2025	12.90
सूर्य	14-02-2025	13.18
चन्द्रमा	06-04-2025	13.26
मंगल	11-05-2025	13.40
राहु	11-08-2025	13.50
गुरू	31-10-2025	13.75
शनि	04-02-2026	13.97
बुध	01-05-2026	14.23
केतु	06-06-2026	14.47

सूर्य अन्तर

(06:06:2026 To 05:12:2026)		
सूर्य	15-06-2026	14.57
चन्द्रमा	30-06-2026	14.59
मंगल	11-07-2026	14.63
राहु	07-08-2026	14.66
गुरू	31-08-2026	14.74
शनि	29-09-2026	14.80
बुध	25-10-2026	14.88
केतु	05-11-2026	14.95
शुक्र	05-12-2026	14.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(05:12:2026 To 05:12:2033)

मंगल अन्तर

(05:12:2026 To 03:05:2027)

मंगल	14-12-2026	15.07
राहु	05-01-2027	15.09
गुरू	25-01-2027	15.15
शनि	18-02-2027	15.21
बुध	11-03-2027	15.27
केतु	20-03-2027	15.33
शुक्र	13-04-2027	15.35
सूर्य	21-04-2027	15.42
चन्द्रमा	03-05-2027	15.44

राहु अन्तर

(03:05:2027 To 21:05:2028)

राहु	30-06-2027	15.48
गुरू	20-08-2027	15.63
शनि	20-10-2027	15.77
बुध	13-12-2027	15.94
केतु	04-01-2028	16.09
शुक्र	08-03-2028	16.15
सूर्य	28-03-2028	16.32
चन्द्रमा	29-04-2028	16.38
मंगल	21-05-2028	16.46

गुरू अन्तर

(21:05:2028 To 27:04:2029)

गुरू	06-07-2028	16.53
शनि	29-08-2028	16.65
बुध	16-10-2028	16.80
केतु	05-11-2028	16.93
शुक्र	01-01-2029	16.98
सूर्य	18-01-2029	17.14
चन्द्रमा	15-02-2029	17.19
मंगल	07-03-2029	17.26
राहु	27-04-2029	17.32

शनि अन्तर

(27:04:2029 To 06:06:2030)

शनि	30-06-2029	17.46
बुध	27-08-2029	17.63
केतु	19-09-2029	17.79
शुक्र	26-11-2029	17.86
सूर्य	16-12-2029	18.04
चन्द्रमा	19-01-2030	18.10
मंगल	11-02-2030	18.19
राहु	13-04-2030	18.25
गुरू	06-06-2030	18.42

बुध अन्तर

(06:06:2030 To 03:06:2031)

बुध	27-07-2030	18.57
केतु	17-08-2030	18.71
शुक्र	17-10-2030	18.77
सूर्य	04-11-2030	18.93
चन्द्रमा	04-12-2030	18.98
मंगल	25-12-2030	19.06
राहु	17-02-2031	19.12
गुरू	06-04-2031	19.27
शनि	03-06-2031	19.40

केतु अन्तर

(03:06:2031 To 30:10:2031)

केतु	11-06-2031	19.56
शुक्र	06-07-2031	19.58
सूर्य	14-07-2031	19.65
चन्द्रमा	26-07-2031	19.67
मंगल	04-08-2031	19.70
राहु	26-08-2031	19.73
गुरू	15-09-2031	19.79
शनि	09-10-2031	19.84
बुध	30-10-2031	19.91

शुक्र अन्तर

(30:10:2031 To 30:12:2032)

शुक्र	09-01-2032	19.97
सूर्य	30-01-2032	20.16
चन्द्रमा	06-03-2032	20.22
मंगल	31-03-2032	20.32
राहु	03-06-2032	20.38
गुरू	30-07-2032	20.56
शनि	05-10-2032	20.72
बुध	05-12-2032	20.90
केतु	30-12-2032	21.07

सूर्य अन्तर

(30:12:2032 To 06:05:2033)

सूर्य	05-01-2033	21.13
चन्द्रमा	16-01-2033	21.15
मंगल	23-01-2033	21.18
राहु	11-02-2033	21.20
गुरू	28-02-2033	21.25
शनि	21-03-2033	21.30
बुध	08-04-2033	21.36
केतु	15-04-2033	21.40
शुक्र	06-05-2033	21.43

चन्द्रमा अन्तर

(06:05:2033 To 05:12:2033)

चन्द्रमा	24-05-2033	21.48
मंगल	06-06-2033	21.53
राहु	07-07-2033	21.57
गुरू	05-08-2033	21.65
शनि	08-09-2033	21.73
बुध	08-10-2033	21.82
केतु	20-10-2033	21.91
शुक्र	25-11-2033	21.94
सूर्य	05-12-2033	22.04

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(05:12:2033 To 05:12:2051)

राहु अन्तर

(05:12:2033 To 17:08:2036)

राहु	02-05-2034	22.07
गुरू	11-09-2034	22.47
शनि	14-02-2035	22.83
बुध	03-07-2035	23.26
केतु	30-08-2035	23.64
शुक्र	10-02-2036	23.80
सूर्य	30-03-2036	24.25
चन्द्रमा	21-06-2036	24.38
मंगल	17-08-2036	24.61

गुरू अन्तर

(17:08:2036 To 11:01:2039)

गुरू	13-12-2036	24.77
शनि	30-04-2037	25.09
बुध	01-09-2037	25.47
केतु	23-10-2037	25.81
शुक्र	18-03-2038	25.95
सूर्य	30-04-2038	26.35
चन्द्रमा	12-07-2038	26.47
मंगल	01-09-2038	26.67
राहु	11-01-2039	26.81

शनि अन्तर

(11:01:2039 To 17:11:2041)

शनि	25-06-2039	27.17
बुध	19-11-2039	27.62
केतु	19-01-2040	28.02
शुक्र	10-07-2040	28.19
सूर्य	01-09-2040	28.66
चन्द्रमा	27-11-2040	28.81
मंगल	26-01-2041	29.04
राहु	01-07-2041	29.21
गुरू	17-11-2041	29.64

बुध अन्तर

(17:11:2041 To 05:06:2044)

बुध	29-03-2042	30.02
केतु	22-05-2042	30.38
शुक्र	24-10-2042	30.53
सूर्य	10-12-2042	30.95
चन्द्रमा	25-02-2043	31.08
मंगल	21-04-2043	31.29
राहु	07-09-2043	31.44
गुरू	09-01-2044	31.82
शनि	05-06-2044	32.16

केतु अन्तर

(05:06:2044 To 24:06:2045)

केतु	28-06-2044	32.57
शुक्र	31-08-2044	32.63
सूर्य	19-09-2044	32.80
चन्द्रमा	21-10-2044	32.86
मंगल	12-11-2044	32.94
राहु	09-01-2045	33.00
गुरू	01-03-2045	33.16
शनि	01-05-2045	33.30
बुध	24-06-2045	33.47

शुक्र अन्तर

(24:06:2045 To 24:06:2048)

शुक्र	24-12-2045	33.62
सूर्य	16-02-2046	34.12
चन्द्रमा	19-05-2046	34.27
मंगल	21-07-2046	34.52
राहु	02-01-2047	34.69
गुरू	28-05-2047	35.14
शनि	17-11-2047	35.54
बुध	20-04-2048	36.02
केतु	24-06-2048	36.44

सूर्य अन्तर

(24:06:2048 To 19:05:2049)

सूर्य	10-07-2048	36.62
चन्द्रमा	06-08-2048	36.66
मंगल	26-08-2048	36.74
राहु	14-10-2048	36.79
गुरू	27-11-2048	36.92
शनि	18-01-2049	37.04
बुध	06-03-2049	37.19
केतु	25-03-2049	37.31
शुक्र	19-05-2049	37.37

चन्द्रमा अन्तर

(19:05:2049 To 17:11:2050)

चन्द्रमा	03-07-2049	37.52
मंगल	04-08-2049	37.64
राहु	25-10-2049	37.73
गुरू	06-01-2050	37.95
शनि	03-04-2050	38.15
बुध	19-06-2050	38.39
केतु	21-07-2050	38.60
शुक्र	21-10-2050	38.69
सूर्य	17-11-2050	38.94

मंगल अन्तर

(17:11:2050 To 05:12:2051)

मंगल	09-12-2050	39.02
राहु	05-02-2051	39.08
गुरू	28-03-2051	39.24
शनि	28-05-2051	39.38
बुध	21-07-2051	39.54
केतु	12-08-2051	39.69
शुक्र	15-10-2051	39.75
सूर्य	03-11-2051	39.93
चन्द्रमा	05-12-2051	39.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(05:12:2051 To 05:12:2067)

गुरू अन्तर

(05:12:2051 To 23:01:2054)

गुरू	18-03-2052	40.07
शनि	20-07-2052	40.35
बुध	08-11-2052	40.69
केतु	23-12-2052	40.99
शुक्र	02-05-2053	41.12
सूर्य	10-06-2053	41.47
चन्द्रमा	14-08-2053	41.58
मंगल	28-09-2053	41.76
राहु	23-01-2054	41.88

शनि अन्तर

(23:01:2054 To 05:08:2056)

शनि	18-06-2054	42.20
बुध	27-10-2054	42.60
केतु	20-12-2054	42.96
शुक्र	23-05-2055	43.11
सूर्य	09-07-2055	43.53
चन्द्रमा	24-09-2055	43.66
मंगल	17-11-2055	43.87
राहु	04-04-2056	44.02
गुरू	05-08-2056	44.40

बुध अन्तर

(05:08:2056 To 11:11:2058)

बुध	01-12-2056	44.73
केतु	18-01-2057	45.05
शुक्र	05-06-2057	45.19
सूर्य	16-07-2057	45.56
चन्द्रमा	23-09-2057	45.68
मंगल	11-11-2057	45.87
राहु	15-03-2058	46.00
गुरू	03-07-2058	46.34
शनि	11-11-2058	46.64

केतु अन्तर

(11:11:2058 To 18:10:2059)

केतु	01-12-2058	47.00
शुक्र	27-01-2059	47.05
सूर्य	13-02-2059	47.21
चन्द्रमा	13-03-2059	47.26
मंगल	02-04-2059	47.33
राहु	23-05-2059	47.39
गुरू	07-07-2059	47.53
शनि	30-08-2059	47.65
बुध	18-10-2059	47.80

शुक्र अन्तर

(18:10:2059 To 18:06:2062)

शुक्र	28-03-2060	47.93
सूर्य	16-05-2060	48.38
चन्द्रमा	05-08-2060	48.51
मंगल	01-10-2060	48.73
राहु	24-02-2061	48.89
गुरू	04-07-2061	49.29
शनि	05-12-2061	49.64
बुध	22-04-2062	50.07
केतु	18-06-2062	50.44

सूर्य अन्तर

(18:06:2062 To 06:04:2063)

सूर्य	03-07-2062	50.60
चन्द्रमा	27-07-2062	50.64
मंगल	13-08-2062	50.71
राहु	26-09-2062	50.75
गुरू	04-11-2062	50.87
शनि	20-12-2062	50.98
बुध	30-01-2063	51.11
केतु	16-02-2063	51.22
शुक्र	06-04-2063	51.27

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2063 To 05:08:2064)

चन्द्रमा	17-05-2063	51.40
मंगल	14-06-2063	51.51
राहु	26-08-2063	51.59
गुरू	30-10-2063	51.79
शनि	15-01-2064	51.97
बुध	24-03-2064	52.18
केतु	22-04-2064	52.37
शुक्र	12-07-2064	52.44
सूर्य	05-08-2064	52.67

मंगल अन्तर

(05:08:2064 To 12:07:2065)

मंगल	25-08-2064	52.73
राहु	15-10-2064	52.79
गुरू	30-11-2064	52.93
शनि	23-01-2065	53.05
बुध	12-03-2065	53.20
केतु	01-04-2065	53.33
शुक्र	28-05-2065	53.39
सूर्य	14-06-2065	53.54
चन्द्रमा	12-07-2065	53.59

राहु अन्तर

(12:07:2065 To 05:12:2067)

राहु	21-11-2065	53.67
गुरू	18-03-2066	54.03
शनि	03-08-2066	54.35
बुध	05-12-2066	54.73
केतु	25-01-2067	55.07
शुक्र	20-06-2067	55.21
सूर्य	03-08-2067	55.61
चन्द्रमा	15-10-2067	55.73
मंगल	05-12-2067	55.93

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(05:12:2067 To 05:12:2086)

शनि अन्तर

(05:12:2067 To 08:12:2070)		
शनि	28-05-2068	56.07
बुध	31-10-2068	56.54
केतु	03-01-2069	56.97
शुक्र	05-07-2069	57.14
सूर्य	29-08-2069	57.65
चन्द्रमा	28-11-2069	57.80
मंगल	31-01-2070	58.05
राहु	15-07-2070	58.22
गुरू	08-12-2070	58.67

बुध अन्तर

(08:12:2070 To 18:08:2073)		
बुध	27-04-2071	59.08
केतु	23-06-2071	59.46
शुक्र	04-12-2071	59.61
सूर्य	22-01-2072	60.06
चन्द्रमा	13-04-2072	60.20
मंगल	09-06-2072	60.42
राहु	04-11-2072	60.58
गुरू	15-03-2073	60.98
शनि	18-08-2073	61.34

केतु अन्तर

(18:08:2073 To 26:09:2074)		
केतु	10-09-2073	61.77
शुक्र	17-11-2073	61.83
सूर्य	07-12-2073	62.02
चन्द्रमा	10-01-2074	62.07
मंगल	02-02-2074	62.16
राहु	04-04-2074	62.23
गुरू	28-05-2074	62.39
शनि	31-07-2074	62.54
बुध	26-09-2074	62.72

शुक्र अन्तर

(26:09:2074 To 26:11:2077)		
शुक्र	07-04-2075	62.88
सूर्य	04-06-2075	63.40
चन्द्रमा	08-09-2075	63.56
मंगल	15-11-2075	63.83
राहु	06-05-2076	64.01
गुरू	08-10-2076	64.48
शनि	09-04-2077	64.91
बुध	20-09-2077	65.41
केतु	26-11-2077	65.86

सूर्य अन्तर

(26:11:2077 To 08:11:2078)		
सूर्य	14-12-2077	66.04
चन्द्रमा	11-01-2078	66.09
मंगल	01-02-2078	66.17
राहु	25-03-2078	66.22
गुरू	10-05-2078	66.37
शनि	04-07-2078	66.49
बुध	22-08-2078	66.64
केतु	11-09-2078	66.78
शुक्र	08-11-2078	66.83

चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2078 To 08:06:2080)		
चन्द्रमा	26-12-2078	66.99
मंगल	29-01-2079	67.12
राहु	25-04-2079	67.22
गुरू	12-07-2079	67.45
शनि	11-10-2079	67.66
बुध	01-01-2080	67.92
केतु	04-02-2080	68.14
शुक्र	10-05-2080	68.23
सूर्य	08-06-2080	68.50

मंगल अन्तर

(08:06:2080 To 18:07:2081)		
मंगल	02-07-2080	68.58
राहु	01-09-2080	68.64
गुरू	25-10-2080	68.81
शनि	28-12-2080	68.95
बुध	23-02-2081	69.13
केतु	19-03-2081	69.29
शुक्र	25-05-2081	69.35
सूर्य	15-06-2081	69.54
चन्द्रमा	18-07-2081	69.59

राहु अन्तर

(18:07:2081 To 24:05:2084)		
राहु	21-12-2081	69.68
गुरू	09-05-2082	70.11
शनि	21-10-2082	70.49
बुध	17-03-2083	70.94
केतु	17-05-2083	71.35
शुक्र	06-11-2083	71.51
सूर्य	28-12-2083	71.99
चन्द्रमा	24-03-2084	72.13
मंगल	24-05-2084	72.37

गुरू अन्तर

(24:05:2084 To 05:12:2086)		
गुरू	25-09-2084	72.53
शनि	18-02-2085	72.87
बुध	29-06-2085	73.27
केतु	22-08-2085	73.63
शुक्र	23-01-2086	73.78
सूर्य	11-03-2086	74.20
चन्द्रमा	27-05-2086	74.33
मंगल	20-07-2086	74.54
राहु	05-12-2086	74.69

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(05:12:2086 To 05:12:2103)

बुध अन्तर

(05:12:2086 To 03:05:2089)

बुध	09-04-2087	75.07
केतु	30-05-2087	75.41
शुक्र	24-10-2087	75.55
सूर्य	07-12-2087	75.95
चन्द्रमा	18-02-2088	76.07
मंगल	09-04-2088	76.27
राहु	20-08-2088	76.41
गुरू	15-12-2088	76.77
शनि	03-05-2089	77.09

केतु अन्तर

(03:05:2089 To 30:04:2090)

केतु	24-05-2089	77.48
शुक्र	24-07-2089	77.53
सूर्य	11-08-2089	77.70
चन्द्रमा	10-09-2089	77.75
मंगल	01-10-2089	77.83
राहु	24-11-2089	77.89
गुरू	12-01-2090	78.04
शनि	10-03-2090	78.17
बुध	30-04-2090	78.33

शुक्र अन्तर

(30:04:2090 To 28:02:2093)

शुक्र	20-10-2090	78.47
सूर्य	10-12-2090	78.94
चन्द्रमा	07-03-2091	79.08
मंगल	06-05-2091	79.32
राहु	08-10-2091	79.48
गुरू	23-02-2092	79.91
शनि	05-08-2092	80.28
बुध	30-12-2092	80.73
केतु	28-02-2093	81.13

सूर्य अन्तर

(28:02:2093 To 05:01:2094)

सूर्य	16-03-2093	81.30
चन्द्रमा	11-04-2093	81.34
मंगल	29-04-2093	81.41
राहु	14-06-2093	81.46
गुरू	26-07-2093	81.59
शनि	13-09-2093	81.70
बुध	27-10-2093	81.84
केतु	14-11-2093	81.96
शुक्र	05-01-2094	82.01

चन्द्रमा अन्तर

(05:01:2094 To 06:06:2095)

चन्द्रमा	17-02-2094	82.15
मंगल	19-03-2094	82.27
राहु	05-06-2094	82.35
गुरू	12-08-2094	82.56
शनि	02-11-2094	82.75
बुध	15-01-2095	82.98
केतु	14-02-2095	83.18
शुक्र	11-05-2095	83.26
सूर्य	06-06-2095	83.50

मंगल अन्तर

(06:06:2095 To 02:06:2096)

मंगल	27-06-2095	83.57
राहु	20-08-2095	83.62
गुरू	07-10-2095	83.77
शनि	04-12-2095	83.91
बुध	24-01-2096	84.06
केतु	14-02-2096	84.20
शुक्र	15-04-2096	84.26
सूर्य	03-05-2096	84.43
चन्द्रमा	02-06-2096	84.48

राहु अन्तर

(02:06:2096 To 21:12:2098)

राहु	20-10-2096	84.56
गुरू	21-02-2097	84.94
शनि	19-07-2097	85.28
बुध	28-11-2097	85.68
केतु	21-01-2098	86.05
शुक्र	25-06-2098	86.19
सूर्य	11-08-2098	86.62
चन्द्रमा	27-10-2098	86.75
मंगल	21-12-2098	86.96

गुरू अन्तर

(21:12:2098 To 28:03:2101)

गुरू	10-04-2099	87.11
शनि	19-08-2099	87.41
बुध	14-12-2099	87.77
केतु	31-01-2100	88.09
शुक्र	18-06-2100	88.22
सूर्य	30-07-2100	88.60
चन्द्रमा	06-10-2100	88.71
मंगल	24-11-2100	88.90
राहु	28-03-2101	89.04

शनि अन्तर

(28:03:2101 To 05:12:2103)

शनि	30-08-2101	89.38
बुध	17-01-2102	89.80
केतु	15-03-2102	90.18
शुक्र	26-08-2102	90.34
सूर्य	14-10-2102	90.79
चन्द्रमा	04-01-2103	90.92
मंगल	02-03-2103	91.15
राहु	27-07-2103	91.30
गुरू	05-12-2103	91.71

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(05:12:2103 To 05:12:2110)

केतु अन्तर

(05:12:2103 To 03:05:2104)

केतु	14-12-2103	92.07
शुक्र	08-01-2104	92.09
सूर्य	15-01-2104	92.16
चन्द्रमा	28-01-2104	92.18
मंगल	06-02-2104	92.21
राहु	28-02-2104	92.24
गुरू	19-03-2104	92.30
शनि	12-04-2104	92.35
बुध	03-05-2104	92.42

शुक्र अन्तर

(03:05:2104 To 03:07:2105)

शुक्र	13-07-2104	92.48
सूर्य	03-08-2104	92.67
चन्द्रमा	08-09-2104	92.73
मंगल	03-10-2104	92.83
राहु	06-12-2104	92.89
गुरू	01-02-2105	93.07
शनि	09-04-2105	93.22
बुध	08-06-2105	93.41
केतु	03-07-2105	93.57

सूर्य अन्तर

(03:07:2105 To 08:11:2105)

सूर्य	10-07-2105	93.64
चन्द्रमा	20-07-2105	93.66
मंगल	28-07-2105	93.69
राहु	16-08-2105	93.71
गुरू	02-09-2105	93.76
शनि	22-09-2105	93.81
बुध	10-10-2105	93.86
केतु	18-10-2105	93.91
शुक्र	08-11-2105	93.93

चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2105 To 09:06:2106)

चन्द्रमा	26-11-2105	93.99
मंगल	08-12-2105	94.04
राहु	09-01-2106	94.07
गुरू	06-02-2106	94.16
शनि	12-03-2106	94.24
बुध	11-04-2106	94.33
केतु	24-04-2106	94.41
शुक्र	29-05-2106	94.45
सूर्य	09-06-2106	94.55

मंगल अन्तर

(09:06:2106 To 05:11:2106)

मंगल	18-06-2106	94.58
राहु	10-07-2106	94.60
गुरू	30-07-2106	94.66
शनि	22-08-2106	94.71
बुध	12-09-2106	94.78
केतु	21-09-2106	94.84
शुक्र	16-10-2106	94.86
सूर्य	23-10-2106	94.93
चन्द्रमा	05-11-2106	94.95

राहु अन्तर

(05:11:2106 To 23:11:2107)

राहु	01-01-2107	94.98
गुरू	21-02-2107	95.14
शनि	23-04-2107	95.28
बुध	16-06-2107	95.45
केतु	09-07-2107	95.60
शुक्र	11-09-2107	95.66
सूर्य	30-09-2107	95.83
चन्द्रमा	01-11-2107	95.88
मंगल	23-11-2107	95.97

गुरू अन्तर

(23:11:2107 To 30:10:2108)

गुरू	08-01-2108	96.03
शनि	02-03-2108	96.16
बुध	19-04-2108	96.31
केतु	09-05-2108	96.44
शुक्र	05-07-2108	96.49
सूर्य	22-07-2108	96.65
चन्द्रमा	19-08-2108	96.69
मंगल	08-09-2108	96.77
राहु	30-10-2108	96.83

शनि अन्तर

(30:10:2108 To 08:12:2109)

शनि	02-01-2109	96.97
बुध	28-02-2109	97.14
केतु	24-03-2109	97.30
शुक्र	30-05-2109	97.36
सूर्य	19-06-2109	97.55
चन्द्रमा	23-07-2109	97.60
मंगल	16-08-2109	97.70
राहु	15-10-2109	97.76
गुरू	08-12-2109	97.93

बुध अन्तर

(08:12:2109 To 05:12:2110)

बुध	29-01-2110	98.08
केतु	19-02-2110	98.22
शुक्र	20-04-2110	98.27
सूर्य	08-05-2110	98.44
चन्द्रमा	07-06-2110	98.49
मंगल	28-06-2110	98.57
राहु	22-08-2110	98.63
गुरू	09-10-2110	98.78
शनि	05-12-2110	98.91

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(05:12:2110 To 05:12:2130)

शुक्र अन्तर

(05:12:2110 To 06:04:2114)

शुक्र	26-06-2111	99.07
सूर्य	26-08-2111	99.62
चन्द्रमा	05-12-2111	99.79
मंगल	14-02-2112	100.07
राहु	15-08-2112	100.26
गुरू	25-01-2113	100.76
शनि	06-08-2113	101.21
बुध	25-01-2114	101.73
केतु	06-04-2114	102.21

सूर्य अन्तर

(06:04:2114 To 06:04:2115)

सूर्य	24-04-2114	102.40
चन्द्रमा	25-05-2114	102.45
मंगल	15-06-2114	102.53
राहु	09-08-2114	102.59
गुरू	26-09-2114	102.74
शनि	23-11-2114	102.88
बुध	14-01-2115	103.03
केतु	04-02-2115	103.18
शुक्र	06-04-2115	103.23

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2115 To 05:12:2116)

चन्द्रमा	27-05-2115	103.40
मंगल	01-07-2115	103.54
राहु	30-09-2115	103.64
गुरू	21-12-2115	103.89
शनि	26-03-2116	104.11
बुध	20-06-2116	104.37
केतु	26-07-2116	104.61
शुक्र	05-11-2116	104.71
सूर्य	05-12-2116	104.98

मंगल अन्तर

(05:12:2116 To 04:02:2118)

मंगल	30-12-2116	105.07
राहु	04-03-2117	105.13
गुरू	30-04-2117	105.31
शनि	06-07-2117	105.47
बुध	05-09-2117	105.65
केतु	29-09-2117	105.82
शुक्र	09-12-2117	105.88
सूर्य	31-12-2117	106.08
चन्द्रमा	04-02-2118	106.14

राहु अन्तर

(04:02:2118 To 04:02:2121)

राहु	18-07-2118	106.23
गुरू	11-12-2118	106.68
शनि	03-06-2119	107.08
बुध	05-11-2119	107.56
केतु	08-01-2120	107.98
शुक्र	09-07-2120	108.16
सूर्य	02-09-2120	108.66
चन्द्रमा	02-12-2120	108.81
मंगल	04-02-2121	109.06

गुरू अन्तर

(04:02:2121 To 05:10:2123)

गुरू	14-06-2121	109.23
शनि	15-11-2121	109.59
बुध	02-04-2122	110.01
केतु	29-05-2122	110.39
शुक्र	07-11-2122	110.54
सूर्य	26-12-2122	110.99
चन्द्रमा	17-03-2123	111.12
मंगल	12-05-2123	111.34
राहु	05-10-2123	111.50

शनि अन्तर

(05:10:2123 To 05:12:2126)

शनि	06-04-2124	111.90
बुध	17-09-2124	112.40
केतु	24-11-2124	112.85
शुक्र	04-06-2125	113.03
सूर्य	01-08-2125	113.56
चन्द्रमा	05-11-2125	113.72
मंगल	12-01-2126	113.98
राहु	04-07-2126	114.17
गुरू	05-12-2126	114.64

बुध अन्तर

(05:12:2126 To 05:10:2129)

बुध	01-05-2127	115.07
केतु	30-06-2127	115.47
शुक्र	19-12-2127	115.63
सूर्य	09-02-2128	116.11
चन्द्रमा	06-05-2128	116.25
मंगल	05-07-2128	116.48
राहु	08-12-2128	116.65
गुरू	25-04-2129	117.07
शनि	05-10-2129	117.45

केतु अन्तर

(05:10:2129 To 05:12:2130)

केतु	30-10-2129	117.90
शुक्र	09-01-2130	117.97
सूर्य	31-01-2130	118.16
चन्द्रमा	07-03-2130	118.22
मंगल	01-04-2130	118.32
राहु	04-06-2130	118.39
गुरू	31-07-2130	118.56
शनि	06-10-2130	118.72
बुध	05-12-2130	118.90

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

कुण्डली में प्राप्त दोषों का विवेचन और उपाय

लाल किताब ज्योतिष में, जीवन की चुनौतियों से निपटने और सफलता पाने के लिए कुंडली में स्थित महत्वपूर्ण दोषों या विकारों की पहचान करना और उनका समाधान करना आवश्यक है। ये दोष, जिनमें पितृ ऋण, अंधा टेवा, आधा अंधा टेवा, मांगलिक दोष और काल सर्प दोष शामिल हैं, किसी के जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे स्वास्थ्य, वित्त, रिश्ते और सामान्य भलाई पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। इन दोषों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए उनके उपचार की तलाश करना महत्वपूर्ण है। उपचार विशिष्ट अनुष्ठानों, प्रार्थना करने, दान करने, रत्न पहनने से लेकर जीवनशैली में बदलाव लाने तक हो सकते हैं। ये उपचारात्मक उपाय ग्रहों के प्रभाव को संतुलित करने, बाधाओं को दूर करने और अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध जीवन का मार्ग बनाने में मदद कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले पितृ ऋण

यदि पूर्वजों में से किसी ने कोई बुरा या पाप कर्म किया है, तो यह पितृ ऋण में बदल जाता है और इसे परिवार के किसी सदस्य द्वारा चुकाया जाना चाहिए। इसीलिए उन्हें कष्ट होता है। कभीकभी, हम अपने बड़ों के पापों से अविश्वसनीय और आश्चर्यजनक तरीके से रहस्यमय तरीके से प्रभावित होते हैं। निहितार्थ यह है कि अपराध कोई और करता है, और जुर्माना कोई और व्यक्ति भरता है। पैतृक ऋण के मामले में अक्सर सज़ा किसी करीबी रिश्तेदार को भुगतनी पड़ती है। पितृ ऋण का विचार जन्म कुंडली से किया जाता है। एक बार ऋण की पहचान हो जाने पर उसका निवारण भी किसी रक्त संबंधी को ही करना पड़ता है। पैतृक ऋण का भुगतान किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता है। रक्त संबंधियों में बहनें, बेटियाँ और उनके बच्चे जैसे पोते, भतीजे, भतीजी आदि शामिल हैं। लाल किताब के अनुसार मनुष्य नौ ग्रहों के आधार पर नौ प्रकार के ऋण लेता है। इनमें आत्मऋण, मातृऋण, पारिवारिक ऋण, बहन/बेटी का ऋण, पितृऋण, स्त्रीऋण, निर्दयताऋण, जीवन भर का ऋण और दैवीय ऋण शामिल हैं।

जालीमाना ऋण

कुण्डली में सुर्य दसवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में जालीमाना ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

जालीमाना ऋण के कारण –

किसी की अकारण जान ले लेना या किसी के घर पर जबरदस्ती कब्जा कर लेना इस ऋण के मुख्य कारण है। घर का दरवाजा दक्षिण दिशा में होगा या ऐसे व्यक्ति का घर उस जगह पर बना होगा, जो अनाथालय के लिए आरक्षित की गई हो या घर सड़क की जमीन पर अथवा कुएं के उपर बना हुआ होगा।

जालीमाना ऋण के लक्षण –

ऐसे में परिवार में बुरी घटनायें होती है। किसी दुर्घटनाओं के वजह से अंग–भंग भी हो जाता है अथवा आंख की बरौनियों या भौहों के बाल अचानक ही झड़ने लगते हैं।

जालीमाना ऋण के उपाय –

1– अपने परिवार के सारे सदस्यों के बराबर मात्रा में धन लेकर एक ही दिन में 100 मजदूरों को भोजन करायें।
2– 100 तालाबों से मछलियां लेकर उन्हें दाना डालें।
3– 43 दिन तक कौओं को रोटी खिलायें।

आपकी कुण्डली में मांगलीक दोष और उसका निवारण

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है, जिसके कारण आप मांगलिक जातक हैं।

आठवें भाव में स्थित मंगल का दाम्पत्य जीवन पर प्रभाव –

आप मेहनती होंगी, मेहनत से कामयाबी का फल मिले या न मिले, इसकी चिंता न होगी। शत्रु चाहे कितना भी बलवान हो, उसका मुकाबला करने की ताकत आप में होगी। आप बहुत ज्यादा आदर्शवादी और आलसी हो सकती हैं। आपकी आदर्शवादिता आपके दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण होगी। माता बचपन में गुजर जायें या वह दुःखी रहें। शत्रु का हमला रोकने की ताकत होगी। माता के पेट में आते ही ताया–मामा, बड़े भाई को कष्ट–परेशानी होगी। अच्छी सेहत, लम्बी आयु और समृद्धि होगी। लम्बी बीमारियों का भय रहेगा। छोटा भाई 4–8 वर्ष के अन्तर में होगा या 13–15 वर्ष का भी अन्तर हो सकता है या छोटा भाई न होगा।

दाम्पत्य जीवन में खुशहाली और मांगलिक दोष के निवारण के लिए आपको निम्न बातों का विशेष ध्यान देना चाहिए –

आपको विधुर पुरुष या विधवा स्त्री के साथ लड़ाई–झगड़ा नहीं करना है। अपने घर में जमीन के अन्दर तन्दूर या भट्टी नहीं बनवानी है। विधुर पुरुष या विधवा स्त्री की बद्दुआ नहीं लें। अपने पास चाकू–छुरी या कोई धारदार हथियार न रखें। तोता–मैना न पालें।

यदि आपके जीवन में निम्न घटनायें या लक्षण स्पष्ट दिखायी दे रहे हैं, तो समझ लेना चाहिए कि आपको मांगलिक दोष का अशुभ परिणाम प्राप्त हो रहा है –

यदि आपके छोटे भाई को कोई असाध्य बीमारी लग जाये या उसका खून खराब और बाजूओं में कष्ट होने लगे। आपकी माता को स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं का सामना करना पड़े।

मांगलिक दोष के निवारण के लिए निम्नलिखित उपाय करें –

गले में चांदी की चैन पहनें। विधवा स्त्री को बर्फी खिलायें और उसका आशीर्वाद लें। तन्दूर में पकी मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलाती रहें। रोटी पकाने से पहले जब तवा गर्म हो जाए तो उस पर पानी के छींटे देकर रोटी पकायें।

मांगलिक दोष के निवारण के लिए विशेष उपाय –

तांबे या सोने की अंगुठी में मूंगा जड़वा कर पहनें।

यहां कुछ सरल उपाय दिए जा रहे हैं, जो दाम्पत्य जीवन में व्याप्त समस्याओं के निवारण में कुछ सीमा तक सहायक हो सकते हैं।

सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए, प्रदोष के दिन गुड़ का शिव लिंग बना कर विधिपूर्वक पूजा करें और प्रतिदिन शिव के बीज मंत्र की एक माला का जाप करें, निःसंदेह चमत्कार अनुभव करेंगी। दाम्पत्य जीवन मधुर बना रहेगा।

दाम्पत्य सुख की प्राप्ति के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रातः काल पीपल के पास तिल्ली के तेल का दीपक जलायें तथा शनिवार और मंगलवार को सायंकाल अपने जीवनसाथी के साथ हनुमान जी के मंदिर जायें, प्रसाद चढ़ायें एवं मनोभाव से दाम्पत्य सुख की प्रार्थना करें। धीरे–धीरे सुख का अनुभव

करेंगी।

यदि पति–पत्नी के मध्य वाक् युद्ध होता रहता है तो जिस व्यक्ति के कारण कलह होता हो उसे बुधवार के दिन कुछ समय के लिए (दो घंटे के लिए) मौन व्रत धारण करना चाहिए।

यदि पति–पत्नी के मध्य परस्पर सामंजस्य एवं सहयोग की भावना का अभाव हो तो उन्हें गुरुवार को साथ–साथ राम–सीता मंदिर या लक्ष्मीनारायण मंदिर जाकर भगवान को पुष्प एवं प्रसाद चढ़ाने चाहिए तथा प्रेम का वातावरण घर में बना रहे ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए और प्रसाद का भोग लगाकर मंदिर में बांटना चाहिए।

पति को चाहिए कि वह शुक्रवार को अपनी जीवन संगिनी को सुंदर पुष्प या इत्र की शीशी भेंट करे तथा उसके साथ सफेद मिठाई खाये।

घर के वातावरण को सुखमय बनाए रखने के लिए घर में गमले में सुगंधित व सुंदर पुष्प के पौधे लगाने चाहिए। बड़े कमरे में कृत्रिम सुंदर पुष्प युक्त गमले सजा कर रखें।

शयन कक्ष में गमले में मोर पंख सजाकर इस प्रकार रखें कि वे कमरे के बाहर से दृष्टिगोचर न हों किंतु पति–पत्नी को पलंग से नजर आते रहें।

चौथे भाव में स्थित गुरू का फल

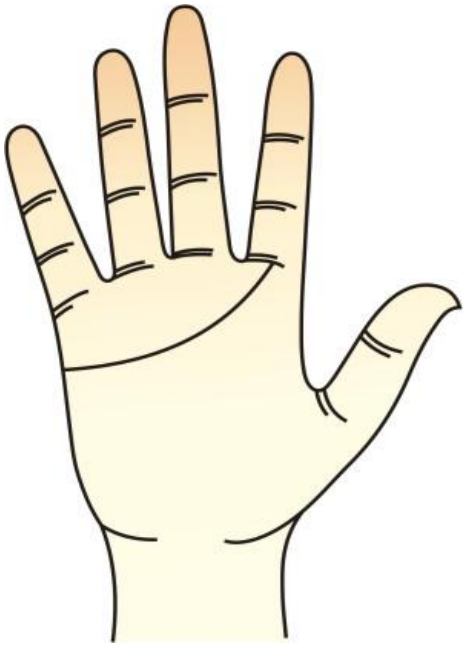

चौथे भाव में स्थित बृहस्पति को उत्तम फल का माना गया है। लाल किताब के अनुसार, आप अपने जीवन में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक रूप से भी आप सुदृढ़ हो सकते हैं। आपको धन की कोई कमी नहीं होगी और आपको पारिवारिक सुख भी भरपूर मात्रा में प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य और मंगल शुभ स्थिति में हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता न्यायाधीश या कोई बड़े अफसर हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और चंद्रमा एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी मानसिक स्थिति के लिए शुभ होगा। आपके माता–पिता की आर्थिक स्थिति आपके जन्म के समय से ही सुधरनी शुरू हो जायेगी।

चौथे भाव में स्थित गुरू के उपाय और सावधानियाँ

(1) आपको अपने घर में मंदिर का निर्माण नहीं करना चाहिए।
(2) बड़ों की सेवा करनी चाहिए।
(3) साँप को दूध पिलायें।
(4) दूसरों के सामने अपने शरीर को खुला न रखें।
(5) अपने बनियान पर लाल निशान लगाकर के

पहनें।

(6) दूसरों के सामने नहीं नहायें।

(7) धार्मिक स्थानों की यात्रा करें और पूजा करें।

(8) कुलपुरोहित का आशीर्वाद लें।

(9) पीपल का पेड़ लगायें।

(10) अपना चरित्र स्वच्छ रखें।

(11) बुजुर्गों की सेवा करें।

(12) घर की दीवार पर पीला पेंट लगायें।

दसवें भाव में स्थित सूर्य का फल

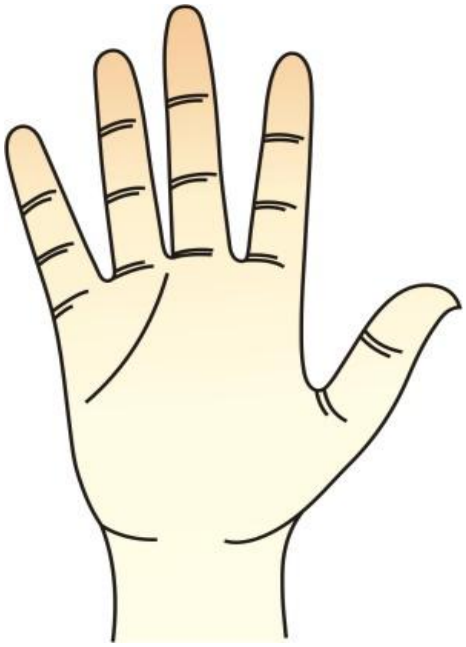

लाल किताब में दसवें भाव में स्थित सूर्य इज्जत, सेहत और दौलत का मालिक कहा गया है। परन्तु आप वहमी स्वभाव वाले हो सकते हैं। यहां शनि के पक्के घर में होने की वजह से सूर्य बहुत शुभ फल नहीं देता है। यदि आप अपने सर पर सफेद या हल्के शरबती रंग की पगड़ी या टोपी पहनें तो सूर्य का फल शुभ हो जायेगा।

यहां पर बैठा हुआ सूर्य शनि से संबंधित चीजों जैसे–मशीनरी, व्यक्ति के घुटनों और लकड़ी के कार्यों पर अशुभ प्रभाव डालता है। पैतृक सम्पत्ति के लिए भी सूर्य का फल अधिक शुभ नहीं होता है।

आपको कोयले या बिजली से संबंधित कार्य नहीं करना चाहिए।

आपको अपनी परेशानी की चर्चा दूसरों के सामने नहीं करनी चाहिए, नहीं तो आपका दुख और बढ़ता जायेगा। आपको अपने मकान के पश्चिम दीवार में रोशनी के लिए सुराख नहीं करना

चाहिए। आपको ज्यादा गुस्सा भी नहीं करना चाहिए, अन्यथा सूर्य का फल और अशुभ हो जायेगा। नीले कपड़े से आपको हमेशा परहेज करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है।

दसवें भाव में स्थित सूर्य के उपाय और सावधानियाँ

(1) सफेद या शरबती रंग की पगड़ी या टोपी से अपना सिर हमेशा ढके रहें।
(2) काला या नीला कपड़ा नहीं पहनें।
(3) बहते हुए पानी में ताँबे का पैसा बहायें।
(4) शिलाजीत जल में प्रवाहित करें।
(5) भूरी भैंस पालें।
(6) माँस-मदिरा से दूर रहें।
(7) अपने पैतृक मकान में हैण्डपम्प लगवायें।
(8) नेवला पालें।
(9) रविवार का व्रत रखें।
(10) घर का आंगन खुला रखें।
(11) हरिवंश-पुराण की कथा सुनें।

चौथे भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

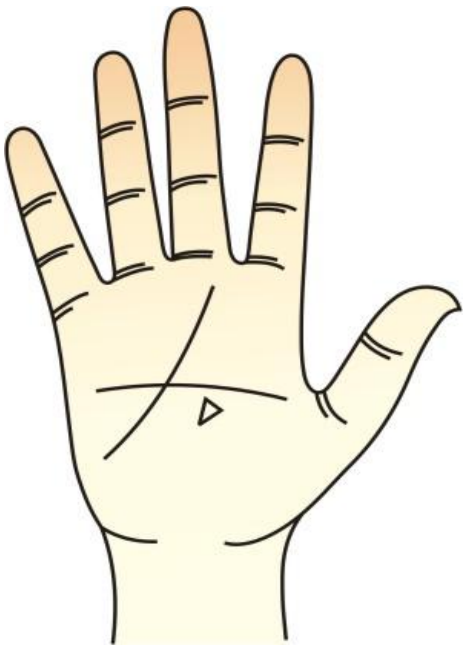

चौथे भाव में बैठे चंद्रमा को मीठा पानी कह कर पुकारा गया है। लाल किताब के अनुसार, शिक्षा के क्षेत्र में आपको इसका शुभ परिणाम प्राप्त होगा। पढ़ाई के मामले में एक तरह से आपको दैवी

सहायता प्राप्त होती रहेगी। आप कोई भी पढ़ाई करें, आपको शुभ परिणाम मिलेगा।

चौथे घर में चंद्रमा को आमदनी का दरिया भी कहा गया है और यह ऐसा दरिया है जो कि खर्च करने से बढ़ता जायेगा।

चौथे घर में चंद्रमा को बहुत ही शुभ माना गया है। लाल किताब के अनुसार, चंद्रमा को और भी शुभ करने के लिए मिट्टी के घड़े में दूध भरकर रखना चाहिए। आपकी उम्र लंबी होगी। यदि आपका जन्म शुक्ल पक्ष का है, तो बचपन का समय बहुत ही सुखमय होगा।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें या ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप बहुत ही सभ्य व्यक्ति होंगे और बड़े खानदान से संबंधित होने के सारे गुण आपमें मौजूद होंगे।

चौथे भाव में स्थित चन्द्रमा के उपाय और सावधानियाँ

(1) दूध का दान लाभदायक होगा।
(2) दूध का व्यापार नहीं करना चाहिए।
(3) शुभ कार्य पर जाने से पहले घर में दूध या पानी से भरा हुआ कुम्भ स्थापित करें।
(4) शिवजी की पूजा करें।
(5) गंगा स्नान करें।
(6) घर की छत के नीचे कुआं या हैण्डपंप न रखें।

ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र का फल

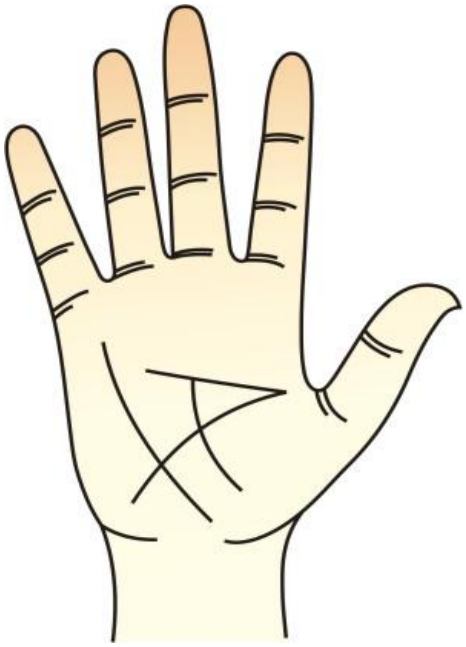

लाल किताब में ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र हो ''माया के चक्कर में घुमता हुआ व्यक्ति'' और

''खुबसूरत'' कहा गया है। सामान्यतः आप जिन्दगी भर पैसे के पीछे भागते रह सकते हैं। हालांकि आपका स्वभाव बहुत भोला-भाला हो सकता है।

यदि आपकी संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, तो आपको किसी धार्मिक स्थान में सरसों का तेल एवं काले कपड़े में बांधकर उड़द का दान करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में बुध या चंद्रमा उच्चस्थ या पक्के घरों के हैं। लाल किताब के अनुसार, आप अपनी विचारधारा जल्दी-जल्दी बदलते रह सकते हैं तथा आप गुप्त कार्य करने के आदि हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में तीसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आपकी पारिवारिक स्थिति अधिक ठीक नहीं हो सकती है। यदि आपको वीर्य से संबंधित बीमारियां हैं, तो आपको मछली के तेल का सेवन करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र और बुध एक साथ ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आप अपने प्रियजनों से दूर ही रहेंगे और आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके साथ मधुर व्यवहार नहीं कर सकते हैं।

ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र के उपाय और सावधानियाँ

(1) दही या रूई मंदिर में दान करें।
(2) सरसों का तेल पानी में बहायें या मंदिर में दान करें।
(3) सोने की भस्म खायें।
(4) विवाह के वक्त गाय का दान करें।
(5) मछली का तेल खायें।
(6) शुक्रवार का व्रत रखें।
(7) घर में आये हुए मेहमानों को भोजन करायें।
(8) अपना पहनावा ठीक रखें।

आठवें भाव में स्थित मंगल का फल

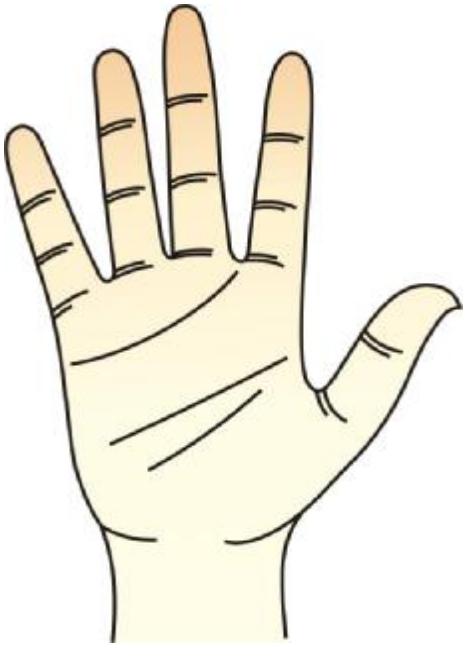

लाल किताब में आठवें भाव में मंगल को ''मौत का फंदा'' कहा गया है। आमतौर पर आठवें भाव में बैठा हुआ मंगल शुभ फल नहीं देता है। आप बहुत हिम्मत वाले होंगे। नतीजा हार हो या जीत, आप मुकाबला जरूर करेंगे।

यदि कोई विधवा स्त्री आपको श्राप देती है या बद्दुआ देती है, तो आपका भाग्य पूरी तरह नष्ट हो सकता है। आपको किसी विधवा स्त्री का आशीर्वाद लेते रहना चाहिए।

यदि आपका छोटा भाई आपसे चार या आठ साल छोटा है, तो यह मंगल के अशुभ होने की निशानी है। लाल किताब के अनुसार, आपका छोटा भाई आपकी मदद नहीं कर सकता है।

यदि आपके घर के अन्दर जमीन खोदकर कोई भट्ठी (शादी-विवाह के अवसर पर) बनाई गई हो, तो यह आपके लिए अशुभ फलदायक हो सकता है। आपको तंदूर में मीठी रोटी बनाकर 43 दिनों तक कुत्तों को खिलाना चाहिए।

आठवें भाव में बैठा हुआ मंगल आपके पिता के लिए शुभ नहीं हो सकता है। आपकी आँखों में खराबी एवं जोड़ों में दर्द हो सकता है। आपके मित्र शत्रु बन सकते हैं। 28 से 36 वर्ष तक की उम्र में आपके छोटे भाई आपके लिए कई प्रकार की परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। आपको अपने घर में तंदूर नहीं बनाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है या उसमें चंद्रमा या बृहस्पति स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में मंगल का फल शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले, तीसरे, चौथे, आठवें या नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में अगर मंगल अशुभ भी है, तो उसका असर अशुभ नहीं होगा।

आठवें भाव में स्थित मंगल के उपाय और सावधानियाँ

(1) 8 मीठी और तंदूर में सिंकी रोटियां कुत्तों को डालें।
(2) तीन धातु की अंगुठी पहनें।
(3) गले में हमेशा चाँदी की चेन पहनें।
(4) मृगछाला का प्रयोग करें।
(5) 4 किलो रेवड़ी या बताशे बहते पानी में बहायें।
(6) अपनी दादी से चाँदी लेकर अपने गले में पहनें।
(7) मंगल के दिन पति-पत्नी स्नान करें, फिर लाल वस्त्र पहन कर ताँबे का पात्र चावलों से भरकर उस पर लाल चंदन का तिलक लगाकर रखें। एक माला गायत्री मंत्र का जाप करके वह पात्र हनुमान मंदिर में देकर आयें। सात मंगल यह उपाय करने से हनुमान जी प्रसन्न हो जाते हैं। जातक किसी भी विधवा स्त्री की सेवा करे।
(8) जब मंगल का प्रभाव अधिक नीच हो रहा हो, तो मिट्टी के पात्र में शहद भरकर ढककर बाहर विराने में दबायें, यह उपाय तभी करें, जब भाव संख्या तीन/तीसरे भाव में बृहस्पति या चंद्रमा स्थित हो।
(9) मंगल का सबसे बड़ा शत्रु बुध है। जब मंगल के साथ मिल जाये तो जातक के ननिहाल को बर्बाद कर देता है। यदि मामा घर छोड़कर कहीं बाहर चले जायें, तो केवल वहीं ठीक रहते हैं। तब नाक छेदन आवश्यक है। 100 दिन तक नाक में चाँदी डालकर रखने से बुध का दोष शांत हो जाता है।
(10) विधवा स्त्रियों का आशीर्वाद लें।
(11) रसोई घर में बैठकर भोजन करें।
(12) अपने घर में एक अंधेरी कोठरी बनवायें।
(13) धार्मिक स्थान में चावल, गुड़ और चने की दाल दान करें।
(14) मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर उसे श्मशान में दबायें।
(15) रोटी पकाने से पहले तवे पर पानी का छींटा मारें।
(16) महागायत्री का पाठ करें।
(17) भाई की सेवा करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित बुध का फल

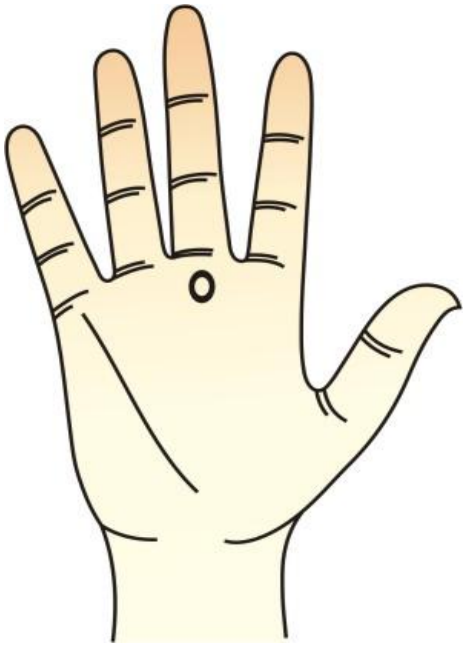

लाल किताब में ग्यारहवें भाव में स्थित बुध को ''दौलतमंद'' कहा गया है।

34 वर्ष की उम्र के बाद आप का पूर्ण रूप से भाग्योदय होगा।

यदि आपको बुध से संबंधित कोई अशुभ असर प्राप्त होता है, तो गले में तांबे का सिक्का पहनें।

आपकी कुण्डली का दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप हुनरमंद होंगे और समाज में आपकी इज्जत भी होगी।

आपकी कुण्डली में बुध और राहु एक साथ ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके दोस्तों को आपसे कोई भी लाभ नहीं मिलेगा। आपकी बहन अमीर होंगी, परन्तु उनका अपने जीवनसाथी से अनबन होता रहेगा। आपको लोहे का छल्ला पहनना चाहिए।

ग्यारहवें भाव में स्थित बुध के उपाय और सावधानियाँ

(1) लोहे की गोली अपने पास रखें।
(2) गले में ताँबे का सिक्का पहनें।
(3) अपनी बहन और बेटी की सेवा करें।
(4) हरे रंग का प्रयोग करें।
(5) फिटकरी का प्रयोग करें।
(6) साधुओं और फकीरों से गंडे ताबीज न लें।
(7) खाली बर्तन को ढक कर न रखें।
(8) चौड़े पत्ते वाले पौधे घर में न लगायें।
(9) नाक छेदन करवायें।
(10) बुधवार का व्रत

करें।

(11) घर में दुर्गा पाठ करवायें।

नौवें भाव में स्थित शनि का फल

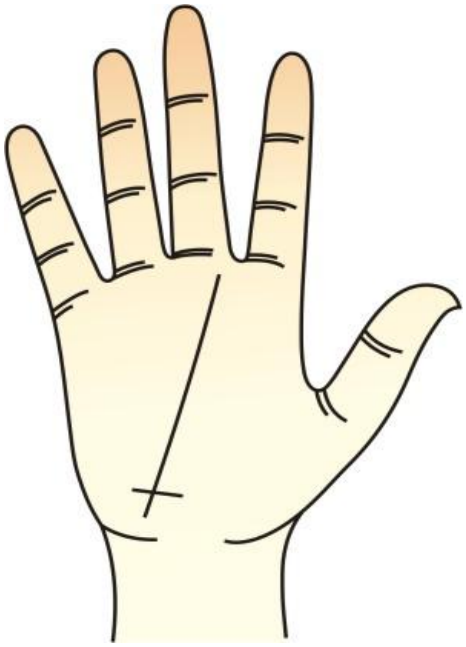

सामान्यतः नौवें भाव में बैठा हुआ शनि शुभ फल प्रदान करता है। आपको मकान का सुख प्राप्त होगा। आपकी शिक्षा ऊँचे दर्जे की हो सकती है और माता-पिता का सुख लम्बे समय तक प्राप्त होगा। आप पर कोई कर्ज नहीं हो सकता है। यदि आपके मकान के पिछले हिस्से में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए खिड़की वगैरह न खुलवायें।

यदि आप अपने घर में ईंधन का सामान या पुरानी लकड़ी इकट्ठा रखते हैं, तो शनि का फल मंदा हो जायेगा।

आपको संतान की प्राप्ति थोड़ी देर से हो सकती है। यदि आपके जीवनसाथी गर्भवती हैं, तो आपको अपना मकान नहीं बनवाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में शनि का फल मंदा हो जाता है और आपकी जिंदगी कष्टमय हो सकती है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी किस्मत आपके माता-पिता की किस्मत से ठीक होगी और आपकी पत्नी अमीर घराने से होंगी।

आपकी कुण्डली में शनि पर राहु या केतु की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप धन का लेन-देन करते हैं, तो आप निर्धन हो जायेंगे और आपके संतान के जन्म में

रूकावटें पैदा हो सकती हैं।

नौवें भाव में स्थित शनि के उपाय और सावधानियाँ

(1) बहते हुए पानी में चावल या बादाम बहायें।
(2) सोने-चाँदी और कपड़ों से संबंधित कारोबार आपके लिए शुभ फलदायक होगा।
(3) घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी जरूर बनवायें।
(4) घर की छत पर ईंधन इक्ट्ठा न करें।
(5) बृहस्पति का उपाय सहायक होगा।
(6) केसर का तिलक लगायें।
(7) भैरों मंदिर में शराब दान दें।
(8) काली भैसं पालें।
(9) साँप को दूध पिलायें।
(10) तेल/शराब का दान करें।
(11) झूठ न बोलें।
(12) माँस-मदिरा का सेवन न करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु का फल

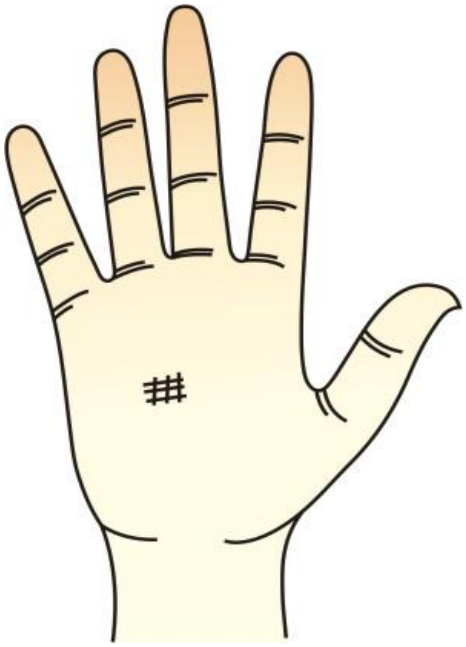

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु के फल को सामान्यतः बुरा ही बताया गया है। आपके जन्म से ही घर की संपत्ति बर्बाद होनी शुरू हो सकती है। आपकी उम्र जब 11माह, 11वर्ष या 21 वर्ष की होगी, तो पिता का धन नष्ट हो सकता है। आप प्रायः फिजूलखर्च हो सकते हैं। ससुराल की हालत अधिक बढ़िया नहीं हो सकती है।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु के अशुभ फल को दूर करने के लिए सोना धारण करना चाहिए और भंगी को कभी–कभी सामान दान करना चाहिए।

आपके लड़के के कान में तकलीफ हो सकती है और आपकी टांगों और रीढ़ की हड्डी में दर्द हो सकता है। आपको यात्रा करते समय सावधानी बरतने की जरूरत होगी, अन्यथा आपको नुकसान हो सकता है।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु के उपाय और सावधानियाँ

(1) सोना पहनें।
(2) केसर का तिलक लगायें।
(3) चाँदी के गिलास में पानी पीयें।
(4) बृहस्पतिवार के दिन चने की दाल पीले कपड़े में बांधकर दान करें।
(5) बृहस्पतिवार के दिन प्याज लहसुन न खायें।
(6) भेंट में इलेक्ट्रॉनिक सामान दें।
(7) हाथी के शक्ल के खिलौने न खरीदें।
(8) चाँदी की नली में सिगरेट पीयें। (यदि आप पीते हों, तब)।
(9) अपने घर में बिजली का सामान ठीक रखें।
(10) नीलम की अंगुठी न पहनें।
(11) नीले कपड़े न पहनें।
(12) घर में या पास में हथियार न रखें।
(13) चार किलो सिक्का नदी में प्रवाहित करें।
(14) दहेज में बिजली का सामान न लें।
(15) बिना इस्तेमाल किये हुए बर्तनों को ढक कर न रखें।

पांचवें भाव में स्थित केतु का फल

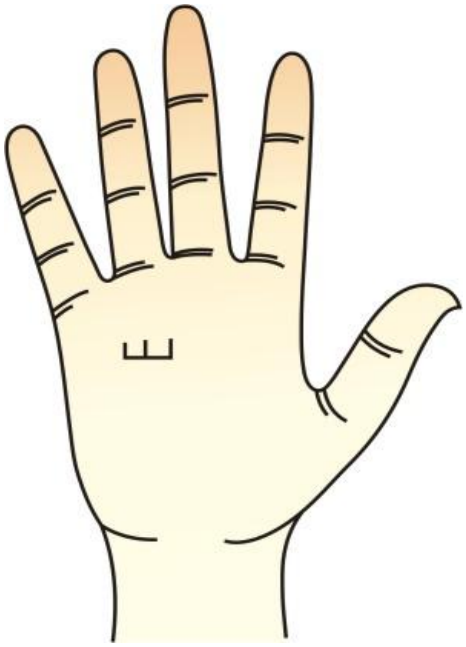

यदि आप युवावस्था के दौरान अपना चाल-चलन ठीक रखें, तो केतु का फल शुभ हो जायेगा। आपके पुत्रों और पौत्रों के लिए भी केतु शुभ फल देगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति सूर्य या चंद्रमा चौथे, छठे या बारहवें भाव में है, आपको पुत्र संतान ज्यादा हो सकती है और आपकी आर्थिक स्थिति पर भी इसका शुभ असर होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति अशुभ स्थिति में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी संतान के लिए केतु का फल बहुत मंदा हो जायेगा। आपके पुत्रों को सांस या दमे की बीमारियां हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा या मंगल तीसरे या चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी आर्थिक स्थिति नाजुक बनी रह सकती है और आपके विचारों में भी स्पष्टता नहीं होगी। ऐसी हालत में केतु के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए चावल-दूध, मसूर की दाल आदि का दान करना चाहिए।

पांचवें भाव में स्थित केतु के उपाय और सावधानियाँ

(1) चावल, दूध, गुड़ आदि का दान करें।
(2) तिल, नींबू, केला आदि का दान करें या जल प्रवाह करें।
(3) खटाई वाली चीजें नौ वर्ष से छोटी कन्याओं को खिलायें।

जीवन से संबंधित योग और उपाय

शिक्षा से संबंधित भविष्यफल और उपाय

याद आप परीक्षा में लाल रंग का पेन जिसका कैप सुनहरा हो, जिसमें किसी भी रंग की स्याही भरी हो, उसका इस्तेमाल करेंगे, तो परीक्षा में अवश्य उतीर्ण होंगे।

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहि बानी।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

इस चौपाई का 108 बार प्रतिदिन प्रातः काल जप करें।

ऊँ माँनिसाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतोः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुना देकमवधीः काममोहितम्।

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जागते ही बिना किसी से बोले तीन बार जप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

जनक सुता जग जननी जानकी।
अजिसय प्रिय करूनानिधान की।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावउँ।

श्री जानकी अथवा श्री सीता राम जी के चित्रपट का पूजन करके इस मंत्र का 108 बार प्रतिदिन जाप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्यादेहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।

श्री हनुमान जी की पूजा करके उपयुक्त दोहे का एक माला (108 बार) प्रतिदिन जाप करें। इससे बुद्धि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई।।

इस चौपाई का प्रतिदिन एक माला (108 बार) जाप करके विद्यालय जाने से निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

लाल किताब के अनुसार, जो बच्चे पढ़ने में कमजोर हैं, उन्हें हरे रंग की तुरमली चाँदी की अंगुठी

या नेकलेस में पहनने से लाभ हो सकता है।

बृहस्पतिवार को पीले कपड़े मे 7 हल्दी की गांठें और बेसन के लड्डू बांधकर नदी में प्रवाहित करने से परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

'ऊँ नमः शिवाय' का जाप करके लाल धागे में दो पाँच मुखी रूद्राक्ष के बीच में एक छेद मुखी रूद्राक्ष को शिवलिंग से स्पर्श कराके धारण करें।

'ऊँ गंग गणपतेः नमः' नामक मंत्र को ग्यारह बार परीक्षा आरम्भ होने से पूर्व जाप करें, परिणाम आपके पक्ष में होगा।

परीक्षा देने जाते समय किसी धार्मिक स्थान में आधा लीटर दूध दान करना उपयोगी साबित हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी संतान पढ़ने में कतरा रहा हो, या स्कूल ना जाने के लिए बहाने बनाती हो, या हठ करती हो, तो तांबे का एक चौकोर टुकड़ा सफेद धागे में बांधकर उसके गले में पहनायें।

'श्री कृष्ण प्रसंग' नामक मंत्र को पूष्य नक्षत्र या किसी शुभ दिन को लाल कलम से 17 बार सफेद पन्ने पर लिखकर परीक्षा के दौरान अपने जेब में रखें।

स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको कान से कम सुनाई देगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र और राहु एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको वीर्य से संबंधित रोग की शिकायत हो सकती है। आपको स्टील के गिलास में दूध भर कर उसमें मक्खन डालकर अपने पुरोहित या किसी मंदिर के पुजारी को पिलायें। बहते हुए पानी में नारियल प्रवाहित करें।

आपकी कुण्डली में शुक्र ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपको चर्म रोग हो, तो आपको मछली का तेल उस पर लगाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में बुध और राहु एक साथ दूसरे, पाँचवें, नौवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको आंखों से संबंधित रोग हो सकते हैं। यदि आपके घर में रसोई घर पूर्वी दीवार के तरफ है, तो उसे दूसरी जगह बनवायें।यदि आपके घर में कोई ना कोई हमेशा रोग ग्रस्त रह रहा है, बीमारी जाने का नाम नहीं ले रहा है, तो आपके घर में जितनी रोटी बनती है, उसमें चार मीठी रोटी जोड़कर महीने में एक बार अमावस्या या संक्रांति के दिन काले कौए, काली गाय या कुत्ते को खिलाना चाहिए, अथवा महीने में एक बार अन्दर से खोखले

कद्दू को किसी धार्मिक स्थल पर दान करना चाहिए, अथवा रात को रोगी के सिरहाने एक, दो या पाँच रूपये का सिक्का रखकर प्रातः काल सफाई कर्मचारी को दान करें, अथवा यदि आप श्मशान से गुजर रहे हैं, तो एक या दो रूपये के सिक्के वहां जरूर फेंके।

धन, ब्यापार और रोजगार से संबंधित योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, शनि नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको बृहस्पति और चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं के कारोबार से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, सूर्य दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको शनि से संबंधित व्यापार जैसे- लोहा, कोयला और मशीनरी के कार्य करने से धन हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको कपड़े, चाँदी अथवा चावल से संबंधित व्यापार करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, शनि नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको ठेकेदारी के कार्यों से अधिक लाभ होगा।

आपकी लग्न राशि मेष, तुला या मकर है। लाल किताब के अनुसार, आप किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे, आप नौकरी में उच्च पद पर आसीन होंगे।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा एक साथ स्थित हैं। लाल किताब में इसे ''दबाया हुआ धन'' कहा गया है।

आपकी कुण्डली में, शनि नौवें भाव में स्थित है एवं दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप आर्थिक रूप से सुदृढ़ होते हुए भी निर्धनों जैसा जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी कुण्डली में, बुध, मंगल या शनि या राहु एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके व्यापार में घाटा एवं चोरी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है और उस पर राहु, केतु या शनि की दृष्टि नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपको लॉटरी, सट्टा इत्यादि से धन की प्राप्ति होगी।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आप पैदाईशी धनवान होंगे।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपनी माता के साथ मिलकर सिले-सिलाये वस्त्रों से संबंधित कोई कार्य करते हैं, तो आपको लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, बुध ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप हीरे, मोती आदि का व्यापार करते हैं, अथवा कागजी कार्यों में रूचि है, तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप सोने, चाँदी आदि के आभूषण बनाने का कार्य या तरल पदार्थों से संबंधित कोई कार्य करते हैं, तो आप सफल होंगे।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप लकड़ी से बने फर्नीचर अथवा अन्य सामानों का व्यापार करते हैं, तो लाभ की स्थिति में रहेंगे।

आपकी कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, एल्युमीनियम से बने हुए वस्तुओं का व्यापार करते हैं, तो आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

मकान से संबंधित महत्वपूर्ण योग, सावधानियाँ और उपाय

आपकी कुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपने गाय पाल रखी है, तो उसके रहने की व्यवस्था घर के पश्चिमी हिस्से में करें।

आपकी कुण्डली में सूर्य दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपने घर की पश्चिमी दीवार को तोड़कर रोशनदान बनवाते हैं, तो आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके पड़ोसी पर भी इसका बुरा असर हो सकता है और सरकारी कार्यों में भी रूकावट आ सकती हैं।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है और मकान से बाहर निकलते समय सीधे हाथ पर रसोई और सामने स्नानघर या पानी का स्थान हो तो आपको कोई ना कोई कष्ट हो सकता है। धन हानि की भी संभावना है।

यदि आपके मकान पर किसी पेड़ की छाया पड़ रही है, तो यह मंगल के शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता है।

यदि आपके मकान की दीवार के पास कटा और सूखा पीपल का पेड़ है, तो आपके परिवार और धन संपत्ति पर इसका बुरा असर पड़ेगा। मंगल का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, 36 वर्ष की उम्र तक आपके पास तीन मकान होंगे, परन्तु चौथे मकान के बारे में आपको सोचना भी नहीं है, अन्यथा धन हानि, शारीरिक कष्ट और संतान पक्ष कमजोर हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपने मकान के अंतिम कोठरी में रोशनी के लिए खिड़की खोलें, तो एक वर्ष के अन्दर आप बर्बाद हो सकते हैं।

यदि आपका मकान बंद गली के अन्तिम सिरे पर स्थित है, और उसमें हवा सीधे आती है, तो आपके संतान पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है। ऐसे मकान में कभी ना रहें।

यदि आपके मकान पर किसी धार्मिक स्थल आदि की छाया पड़ रही है, तो घर में बीमारियां परेशान करती रहेंगी।

रसोई घर में खाना बनाने का चुल्हा और बर्तन धोने का स्थान एक ही प्लेटफार्म पर नहीं होना चाहिए, अन्यथा घर में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों स्थानों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें।

घर के अन्दर यदि लोहे की चारपाई हो, तो पूर्व–दक्षिण दिशा में बिछायें।

घर के मालिक को दक्षिण–पश्चिम के कोने में सोना चाहिए।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार, स्त्रियों के लिए हानिकारक होगा। ऐसे मकान में केवल विधुर पुरूष ही सुखपूर्वक रह सकते हैं। यदि आप मुख्य द्वार पर तांबे की कील गाड़े, तो स्थिति सुखद हो सकती है। चाँदी की चौड़ी पत्ती दरवाजा के एक कोने से दूसरे कोने तक बिछा सकते हैं। घर पर मिट्टी का बंदर रखें, जिसका मुहं दक्षिण दिशा की ओर हो। बकरी का दान करें। दिन के दो बजे के बाद साबूत मूंग की दाल किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।

यदि आपके मकान में कोई मिट्टी वाला स्थान नहीं है, तो यह परिवार की स्त्रियों के लिए हानिकारक हो सकता है और धन सम्पत्ति पर भी बुरा असर हो सकता है। निम्न उपाय करने से स्थिति सुखद हो सकती है। मिट्टी की बनी हुई औरत की मूर्ति घर में रखें। सफेद रूमाल में कपूर की टिकिया, देशी घी और रूई बांधकर रखें। घर में छोटे–मोटे कार्य करने के लिए नौकरानी रखें।

यदि आपके मकान में धन रखने के लिए तिजोरी, आला या तहखाना बना हुआ है, तो उसे बिल्कुल खाली ना रखें। बादाम अथवा छुआरे रख सकते हैं।

यदि आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान ना खोलें।

यदि आपको अपने घर की छत बदलनी है, तो पहले एक अस्थाई छत पुरानी छत के ऊपर बनायें।

आपकी कुण्डली में, मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको विवाह इत्यादि समारोहों के लिए घर से बाहर वाले हिस्से में भट्ठी नहीं बनवानी चाहिए। यदि मजबूरीवश ऐसा करना पड़े, तो भट्ठी से जली हुई मिट्टी निकालकर नदी में प्रवाहित करें, और भट्ठी में नई मिट्टी डालें।

लाल किताब के अनुसार, घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय सीधे हाथ की तरफ पानी का स्थान और उलटे हाथ की तरफ या पीठ की तरफ रसोई होना उत्तम होता है।

यदि आपके मकान पर पीपल इत्यादि की छाया पड़ रही है, तो यह आपके तरक्की के लिए नुकसानदायक हैं। आपको उस पीपल की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए।

यदि आपके मकान के आस-पास कुआं है, तो उसमें भूलकर भी कुड़ा-करकट ना डालें। प्रतिदिन उसमें दूध डालने से आपकी उन्नति होगी।

घर के अन्दर किकर का पेड़ ना लगायें।

मकान या प्लाट का मुख्य द्वार उत्तर-पूर्व या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

आपकी चंद्र राशि- मेष, सिंह या धनु है। लाल किताब के अनुसार, मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में होना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, सफेद रंग या पेन्ट का प्रयोग मकान में सभी जगह किया जा सकता है। नीले रंग या पेन्ट का प्रयोग शयन कक्ष या कान्फ्रेंस हाल में करें।

हरे या क्रीम रंग का प्रयोग अध्ययन कक्ष में करें।

गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग भोजनालय में करें। पुलिस या मिलिट्री के स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर है, तो उसमें सफेद रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो उसमें लाल, गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है, तो उसमें हरे या पीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है, तो उसमें नीले या हल्के रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण-पूर्व दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण-पश्चिम दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर-पश्चिम दिशा में है, तो आपको अपने मकान में सफेद रंग का प्रयोग करना चाहिए।

आपको अपने मकान का मुख्य द्वार मकान के कम चौड़ाई वाले हिस्से में रखना चाहिए। यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दो पल्लों का है, तो यह आपको अधिक लाभकारी होगा। यदि मुख्य द्वार अन्दर की तरफ खुलता है, तो यह अधिक लाभकारी होगा।

आपको अपने मकान के उत्तर और पूर्व दिशा में दक्षिण और पश्चिम दिशा से अधिक खुला स्थान रखना चाहिए।

आपको अपने मकान की दक्षिण और पश्चिम की दीवार ज्यादा मोटी और ज्यादा ऊँची रखनी चाहिए।

मकान की छत की ढलान उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व में होनी चाहिए।

अपने घर के प्रत्येक कमरे का उत्तर–पूर्व वाला कोना खाली रखें।

मकान में बरामदा और खुली छत उत्तर और पूर्व में होनी चाहिए।

मकान में बालकनी उत्तर और पूर्व में होना चाहिए। बेसमेन्ट उत्तर–पूर्वी भाग में होनी चाहिए।

यदि मकान में पत्थर की मूर्ति लगा रहे हैं, तो उसे दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगायें।

मकान के दक्षिण–पश्चिम वाले हिस्से में सम संख्या में वृक्ष लगायें।

मकान में तुलसी जी का पौधा पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व में लगायें।

मकान में खिड़कियों की संख्या उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक होनी चाहिए। दरवाजे और खिडकियों की संख्या सम होनी चाहिए, परन्तु संख्या का अन्त 10, 20 इत्यादि से नहीं होना चाहिए।

मकान में सीढ़ियां दक्षिण, पश्चिम या ईशान कोण को छोड़कर कहीं भी बनाई जा सकती हैं। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्ती होना चाहिए।

यदि आप अपने मकान में पानी का हौज बनवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पूर्व में बनवायें, यह काफी लाभदायक होगा।

यदि आप छत पर पानी की टंकी रखवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पश्चिम दिशा में रखवायें। टंकी का रंग काला अथवा नीला हो तो बढ़िया रहेगा।

मकान में पूजा का स्थान ईशान, पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भगवान की मूर्ति का मुख उत्तर या पूर्व की ओर रखें। पूजा घर का आकार पिरामिड जैसा रखें। पूजा घर के फर्श का रंग सफेद या हल्का पीला होना चाहिए। पूजा घर के दीवारों का रंग क्रीम, सफेद या हल्का नीला रखें।

मकान में रसोई घर दक्षिण–पूर्व दिशा में होना चाहिए। खाना बनाते समय अपना मुख पूर्व की ओर रखें। रसोई घर की खिड़कियां पूर्व और दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।

मकान में भोजनकक्ष पश्चिम दिशा में रखें। खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

मकान में स्नानागार पूर्व, उत्तर या उत्तर–पश्चिम भाग में रखें।

मकान का शौचालय दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो उस समय मकान का निर्माण आरम्भ ना करें, और एक से अधिक मकान ना बनवायें।

विवाह, स्त्री और गृहस्थ–सुख से संबंधित योग और उपाय

आपकी कुण्डली में राहु पहले, तीसरे, सातवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपका अपनी पत्नी के साथ मनमुटाव रहेगा। उपाय के तौर पर कन्या के पिता को चाहिए कि कन्यादान के समय अपनी पुत्री को चाँदी की ईंट भेंट करें और कन्या उसे अपने पास हमेशा रखें।

आपकी कुण्डली में शुक्र ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने विवाह के समय एक गाय के मूल्य के बराबर धन दान करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र पहले, दूसरे, आठवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी की उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति या केतु की दृष्टि शनि पर पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपनी जीवनसाथी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा और आपकी पत्नी सुन्दर और सुघड़ होंगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य और शुक्र या राहु और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार लगातार धूपदीप जलाकर वटवृक्ष की पूजा करें।

आपकी कुण्डली में शुक्र अपने शत्रु ग्रहों के साथ बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, शीघ्र विवाह हेतु 43 दिन तक लगातार दही मिला आलू किसी काली गाय को खिलायें।शीघ्र विवाह हेतु– मंगल–पार्वती स्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें।

शीघ्र विवाह हेतु– स्नान के पश्चात कांसे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर मुहुर्त देखकर छाया पात्र निकालें।

शीघ्र विवाह हेतु– पीले वस्त्र में चने की दाल बांधकर बृहस्पतिवार के दिन किसी मंदिर में दान

करें।

यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो रहा है, तो वाल्मिकी रामायण के बाल–काण्ड के सर्ग 73 का 43 दिन तक लगातार पाठ करें।

शीघ्र विवाह हेतु दुर्गा सप्तशती के श्लोकों का पाठ 43 दिन तक लगातार करें।

शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।

संतान सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, शुक्र, बृहस्पति एवं सूर्य के बाद के भावों में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको एक से अधिक संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी कुण्डली में, बुध और राहु एक साथ ग्यारहवें या पहले भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति पहले से छठे भाव के बीच स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता की आयु लम्बी होगी और उनका आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में, मंगल, शुक्र या बुध पक्के भावों में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान प्राप्ति में कोई भी बाधा नहीं आ सकती है और संतान भी समय पर होगी।

यदि आप बंद गली के मकान में रहते हैं तो आपको संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है और नर संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको बृहस्पतिवार से लगातार 43 दिन तक प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिए।

यदि आप संतान संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, तो आपको अपने घर में हरिवंश पुराण या महाभारत का पाठ करना चाहिए।

यदि आप कुत्ते के नर संतान को अपने घर में रखते हैं, तो आपको संतान अवश्य होगी।

संतान की प्राप्ति के लिए गणेश जी की पूजा करना लाभदायक होता है।

यदि आपको संतान संबंधी कोई समस्या है, तो काले कुत्ते की सेवा करना या उसे अपने घर पर रखकर खाना खिलाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि किसी स्त्री को संतान हो, परन्तु जीवित ना रहे, तो लाल किताब में ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बहुत ही साधारण और सफल उपाय बताया गया है– स्त्री के गर्भवती होने पर उसके बाजु पर लाल धागा बांध दें और संतान होने के पश्चात उस धागे को नवजात शिशु के बाजु पर बांध दें और स्त्री को नया लाल धागा पुनः बांधें। स्त्री के बाजु पर 18 महीने तक बंधा रहना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी स्त्री का बार–बार गर्भपात होता है, तो काला धागा उसकी कमर में बांधें और संतान के जन्म के बाद यह धागा संतान के बाजु पर बांधें।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की संतान जीवित नहीं रहती है, तो संतान के जन्मदिन पर मिठाई की जगह नमकीन खाद्य पदार्थ वितरण करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, प्रसव के समय स्त्री को शारीरिक कष्ट से बचाने और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के लिए प्रसव पीड़ा के समय दो पीतल के बर्तन लेकर एक में मीठी वस्तु और दूसरे में दूध भर के स्त्री के हाथ से स्पर्श करवाकर रखना चाहिए, और शिशु के जन्म के बाद से किसी धार्मिक स्थान में दान करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की नर संतान जीवित न रहती हो, तो उन्हें किसी धार्मिक स्थान में शिशु को जन्म देना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि संतान को कष्ट हो, तो गाय, कौए अथवा कुत्तों को अपने भोजन का एक हिस्सा दें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में एक छत को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल किताब के अनुसार, आपके घर में कुएं को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल–किताब के उपाय करने के नियम और सावधानियाँ

(1) एक दिन में केवल एक ही उपाय करें। एक उपाय समाप्त हो जाने के बाद अगले दिन से दूसरा उपाय शुरू करें।

(2) सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।

(3) सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कोई ऋण है तो पहले ऋण वाले उपाय करें।

(4) कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।

(5) यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।

(6) मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।

(7) एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।

(8) जल प्रवाह की कोई भी वस्तु सिर पर सात बार घुमाकर जल प्रवाह करें।

(9) यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ–साथ एक–एक करके दूसरे उपाय करें।

(10) जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें।

(11) जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबे चलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।

(12) जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।

(13) उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive shoul not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per the ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated result

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in th horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.